छन्द रत्नावली

लेखक—
प्रो० राजाराम शास्त्री
तथा
रामरूप शास्त्री, बी० ए० प्रभाकर
(प्रोफेसर डी० ए० वी० कालिज, लाहौर)

द्वितीय सम्करण
जुलाई १९२६
मूल्य १।=)
सजिल्द

प्रकाशक-
प० राजाराम
मालिक-बाम्बे मैशीन प्रेस
लाहौर।

मुद्रक—
श्रीकृष्ण दीक्षित
बाम्बे मैशीन प्रेस,
मोहनलाल रोड, लाहौर।

विषय-सूची



छन्द-रत्नावली

भूमिका

छन्द शास्त्र

जिस वाक्यरचना में अक्षरों या मात्राओं की संख्या और गति-यति का नियम हो, उसे छन्द कहते हैं, और जिस ग्रन्थ में छन्दों की शिक्षा दी हो, उसे छन्दःशास्त्र या छन्द शास्त्र* कहते हैं।

गद्य और पद्य

बिना छन्द की वाक्यरचना को गद्य और छन्दोबद्ध वाक्य-रचना को पद्य कहते हैं।

गद्य और पद्य में ये भेद हैं। (१) गद्य में इच्छा के अनुसार शब्द न्यूनाधिक लिखे जाते हैं, पर पद्य में उस छन्द के नियत अक्षरों या मात्राओं के अन्दर ही अपना वक्तव्य पूरा

---

* संस्कृत छन्द शब्द हिन्दी में छन्द बोला जाता है। जो हिन्दी छन्दग्रन्थ अपने शुद्ध संस्कृत रूप में छन्दःशास्त्र या छन्दश्शास्त्र बोला जाता है। छन्दोबद्ध, छन्दोभंग, छन्दोमय इत्यादि शब्द भी शुद्ध संस्कृत हैं।

करना होता है। (२) गद्य में कर्ता आदि अपने नियत क्रम में रक्खे जाते हैं, पद्य में यह नियम नहीं होता। (३) गद्य में प्रचलित शब्द अपने अविकृत रूप में बोले जाते हैं, पद्य में कभी कभी विकृत रूप में भी बोले जाते हैं, जैसे दु ख को दूख।

छन्द की विशेषताएँ

बिना छन्द की रचना से छन्दोबद्ध रचना में ये विशेषताएँ होती हैं। (१) छन्द का हर एक चरण अपने तोल में पूरा उतरता है। इससे छन्द पढने में सुहावने प्रतीत होते हैं और सुस्वर गाए जाते हैं, अतएव बड़े प्यारे लगते हैं। और जब राग रागनियों में गाए जाते हैं तब तो चित्त को मोह ही लेते हैं। (२) वाणी के तीन रूप हैं— गद्य, पद्य और गीति। वाणी का जो प्रभाव गद्य में है, पद्य में उससे कई गुना अधिक होता है और गीति में तो उससे भी कई गुना अधिक हो जाता है सो गीति वाणी के प्रभाव की परा काष्ठा है। इस गीति का आधार भी छन्द ही होते हैं, अतएव छन्द ही वाणी में ऊँचे से ऊँचा प्रभाव ले आते हैं। (३) छन्द रुचिकर होते हैं, उनमें जी लगता है, अतएव जल्दी कण्ठस्थ होते हैं, उचित अवसर पर उन्हीं अक्षरों में दुहराये जाते हैं और कण्ठस्थ बने रहते हैं।

छन्दों की सर्वप्रियता

छन्दों में ऐसी मोहिनी शक्ति है कि हर एक व्यक्ति उन से प्यार करता है और हर एक अवस्था में प्यार करता है। छन्द कविजनों के बहुत प्यारे हैं, यह तो जगत्प्रसिद्ध है। पर क्या को

ऐसा व्यक्ति भी है, जिसको ये प्यारे न लगते हों ?

देखो, एक ओर यह ब्रह्मज्ञानी अपने ब्रह्मानुभव को छन्दों में गाता हुआ मस्त हो होकर झूम रहा है। दूसरी ओर यह भक्त प्रभु-भक्ति के गीत गाता हुआ प्रेम में मग्न हो रहा है। तीसरी ओर एक धर्म शास्त्री धर्म की व्यवस्थाओं को और नीतिशास्त्री नीति के नियमों को प्रभावशाली बनाने के लिए छन्दों में रचना कर रहा है।

शास्त्रियों की बात भी रहने दो। यह देखो, गडरिये अपनी भेड़-बकरियों के पीछे और ग्वाले अपनी गौओं के पीछे मीठे मीठे छन्द (लद) रचते और गाते फिरते हैं। मेलों में अपढ़ गँवार भी अपने प्यारे छन्द रच लाते और अपने ग्रामीण बाजों के साथ पूरे जोश से गाते फिरते हैं। खेलों में लड़के-लड़कियाँ उस उस खेल के नियत छन्द बोलते हैं। स्त्रियाँ चरखा कातती हुई छन्द गाती हैं। चक्की पीसती हुई छन्द गाती हैं। विवाह में सुहाग और घोड़ियाँ छन्दों में गाती हैं। वर के लिए सेहरे छन्दों में रचे जाते हैं और वर से छन्दलियाँ पर छन्द बुलवाए जाते हैं। कहाँ तक कहें, विरह की पीड़ा छन्दों में, मिलाप का हर्ष छन्दों में, मृत्यु का शोक छन्दों में, विलाप छन्दों में और वैन छन्दों में गाए जाते हैं। छन्द उत्सवों में हर्ष के बढ़ाने वाले और शोक में अन्दर का उबाल निकाल कर दुःख के घटाने और मिटाने वाले होते हैं। इसी लिए सारी अवस्थाओं में सब को प्रिय लगते हैं।

हमारे भारतीय साहित्य का आदिग्रन्थ ऋग्वेद सारा छन्दों में है। छन्दों के लिए छन्द (छन्दस्) नाम भी सब से पहले ऋग्वेद में आया है,

छन्दों के, विशेष

जो पीछे संस्कृत,प्राकृत और हिन्दी के सारे साहित्य में व्यवहार हुआ है और लोक में भी प्रसिद्ध है। वेदों में छन्दों के विशेष नाम (गायत्री आदि) भी आए हैं। सर्वानुक्रमणियों ने वैदिक छन्दों के भेद दिखलाए हैं और छन्दोज्ञान के बिना वेदपाठ में दोष दिखलाया है। अतएव छन्दःशास्त्र वेद के छः अङ्गों में एक अङ्ग है। पीछे, संस्कृत के कवियों ने वैदिक छन्दों से और उनके अतिरिक्त नए नए छन्दों में भी अपनी रचनाएँ कीं। उन सब की शिक्षा के लिए यथावत् छन्दःशास्त्र बने गए। संस्कृत में छन्दोरचना की शिक्षा का सब से पुराना ग्रन्थ, जो इस समय मिलता है, पिंगलाचार्य का रचा पिंगल छन्दःसूत्र है। इसमें वैदिक और लौकिक छन्दों के लक्षण और भेद बतलाए हैं। इस ग्रन्थ को रच कर पिंगलाचार्य ने इतना नाम पाया है कि पिंगल शब्द छन्दःशास्त्र का पर्याय बन गया है। पिंगल कहो छन्दःशास्त्र कहो, एक ही बात समझी जाती है। संस्कृत में छन्दों की शिक्षा के लिए केदार भट्ट का वृत्तरत्नाकर भी इस विषय का एक पूर्ण ग्रन्थ है। इसमें सभी प्रचलित छन्दों के लक्षण और लक्ष्य दिखलाए हैं, और छन्दों के प्रस्तार भी बतलाए हैं। इसमें एक और विशेषता यह रक्खी है कि जिस छन्द का जो लक्षण किया है,वही उसका लक्ष्य भी है। संस्कृतमें

इस विषय के और दो ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं, गङ्गादास की छन्दोमञ्जरी और कालिदास का श्रुतबोध।

हिन्दी में भी छन्दोग्रन्थ बहुत से रचे गए हैं जैसे महाकवि मतिराम का छन्दसार पिंगल, कविराज सुखदेव मिश्र का वृत्तविचार, बलवीर का पिंगल मनहरण, कुँवर गोपाल सिंह का पिंगल प्रकाश, रसपुञ्जदास का वृत्तविनोद, भिखारीदास का छन्दार्णव और छन्दप्रकाश, गोपालभट्ट का पिंगलप्रकरण, मञ्जुलाल भट्ट का छन्दरत्नाकर, पद्माकर भट्ट का छन्दमञ्जरी इत्यादि, पर इन का अब प्रचार नहीं रहा। आज कल श्री जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' के छन्द प्रभाकर, श्री अयध उपाध्याय के नवीन पिंगल, श्री पुत्तनलाल के सरल पिंगल, और प० रामनरेश त्रिपाठी की हिन्दी पद्यरचना का प्रचार है। नए ढंग पर लिखे हुए ये सब ग्रन्थ परीक्षार्थियों के लिये अधिक उपयुक्त हैं।

ये प्रयत्न अभी जारी हैं और योग्य विद्वानों के नए प्रयत्न उपयोगिता तथा सरलता की दृष्टि से उत्तरोत्तर अधिक सफल हो रहे हैं।

छन्दों की इयत्ता

छन्द इतने ही हैं, इससे अधिक नहीं, यह इयत्ता न कभी हुई, न होगी। वेदों में जितने छन्द हैं, उन सब से निराले बहुत से नये छन्द संस्कृत काव्यनाटकों में पाए जाते हैं। वेदों में अक्षरछन्द या वर्णवृत्त ही हैं, मात्रा-छन्द कोई नहीं। लौकिक संस्कृत में मात्रा-छन्द भी हैं। हिन्दी में कई छन्द उसके अपने हैं, कई संस्कृत से

आए हैं, कई उर्दू से। अब नए छन्द न बनें, ऐसी कोई रोक नहीं। अक्षरों या मात्राओं का जो भी तोल बोलने-गाने में शोभा पाएगा, वही एक छन्द बन जायगा। हाँ, संस्कृत और हिन्दी में छन्दों के जो प्रस्तार दिये हैं उनसे एक एक छन्द के इतने भेद बन जाते हैं, कि दूसरी भाषाओं के तथा सर्वथा नये छन्द भी उसके किसी एक प्रकार में आ ही जाते हैं। जैसाकि गालिब का यह उर्दू पद्य—

रहिए अब ऐसी जगह, चलकर जहाँ कोई न हो।
हमसुख़न कोई न हो, और हम जबाँ कोई न हो।
बे दरोदीवार सा, इक घर बनाना चाहिए।
कोई हमसाया न हो, औ पासबाँ कोई न हो।
पड़िए गर बीमार तो, कोई न हो तीमारदार।
और गर मर जाइए, तो नोहख़्वाँ कोई न हो।

यह २६ मात्राओंका छन्द है। १२,१४ पर यति है। पहली पंक्ति में 'रहिए' और पाँचवीं में 'पड़िए' का ए ह्रस्व बोला जाता है। सो यह २६ मात्राओं के गीतिका छन्द का एक भेद बन जाता है। पर सत्य बात तो यह है, कि एक ही गिनती के अक्षरों में गुरु लघु के स्थान-भेद और गति-यति भेद से भिन्न भिन्न छन्द बन जाते हैं। जैसे १७ अक्षरोंके छन्द की ६, ११ पर यति हो और गुरु लघु का नियम*'य म न स

---

* (पा॰ टि॰) म न भ य ज र स त, ग ल—ये अक्षर गणों और गुरु लघु के वाचक हैं। देखो प्रथम अध्याय का गण-विचार प्रकरण।

म छ ग' के रूप में हो तो शिखरिणी होता है। जैसे—

अनूठी आभा से, सरस सुषमा से सुरस से।
बना जो देती थी, बहु गुणमयी भू विपिन को॥
निराले फूलों की, विविध दलवाली अनुपमा।
जड़ी बूटी नाना, बहु फलवती थीं विलसती॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

और १७ हीं अक्षरों के छन्द की ४, ६ और ७ पर यति हो और गुरुलघु का नियम म भ न त त ग ग के रूप में हो तो मन्दाक्रान्ता होता है। जैसे—

तारे डूबे, तम टल गया, छा लिमा व्योम छाई।
पक्षी बोले, तमचर जगे, ज्योति फैली दिशा में॥
शाखा डोली, सकल तरु की, खिले अम्भोज फूले।
धीरे धीरे, दिनकर कढ़े, तामसी रात बीती॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

इसलिए समानाक्षर छन्दों में भी जब गति-यति एक दूसरे से विलक्षण हों तो उस विलक्षणता का भेद दिखलाने के लिए नामभेद होना उचित है और गति-यति मिलती जुलती हो तो वहाँ समानाक्षर छन्दों में एक छन्द के अनेक भेद मानने चाहिये।

छन्दशास्त्र के इस ग्रन्थ का नाम छन्दःप्रभाकरावली है। इसमें

छन्दरत्नावली — छन्दशास्त्र में काम आने वाली संज्ञा-परिभाषाएँ सरल सुबोध भाषा में पहले लिखदी हैं। पीछे, छन्दों के वर्णन में पहले मात्रिकछन्द, फिर अक्षर-छन्द या वर्णवृत्त दिए हैं। मात्रिक छन्दों में यह क्रम रक्खा है—पहले सम, फिर अर्धसम, फिर विषम, पीछे मात्रिकदण्डक दिये हैं। इसी प्रकार वर्णवृत्तों में भी पहले सम, फिर अर्धसम, फिर विषम और तदनन्तर वर्णदण्डक दिये हैं।

इस क्रम से मात्रिकछन्दों और वर्णवृत्तों का पूरा वर्णन करके, पीछे उभयछन्द दिये हैं। इनमें मात्राएँ तो अपनी गिनती में और वर्ण अपनी गिनती में पूरे उतरते हैं। तदनन्तर मुक्त या स्वच्छन्द छन्द दिये हैं। इनमें मात्राओं या अक्षरों का कोई बन्धन नहीं,तथापि लय में पूरे उतरने से ये वैसे ही सुहावने होते हैं। इस क्रम में छात्र-छात्राओं को कहीं झमेला नहीं पड़ता। सारा विषय सरलता से समझ में आजाता है। लक्षण सरल गद्य में दिये हैं, जो अपने आप समझ में आजाते हैं। उदाहरण भी ढूँढ ढूँढ कर सरल सुबोध और सरस दिये हैं, जो झट समझ में आजायँ, प्यारे लगें और कण्ठस्थ हो जायँ। छन्दों में यह चुनाव किया गया है, कि प्रसिद्ध छन्द सभी आ जायँ। साथ ही अभ्यास भी दे दिये हैं, जिससे कि छात्र-छात्राएं इन छन्दों की पहचान में पूरे व्युत्पन्न हो जायँ। विद्यार्थियों के लिए जो कुछ भी उपयोगी है, वह सब कुछ

दे देने का यत्न किया है। अप्रचलित या अल्पप्रचलित छन्द छोड़ दिए हैं ताकि विद्यार्थी अनावश्यक झमेले में न पड़ें। हमें विश्वास है कि इस ग्रन्थ को सम्यक् समझ कर विद्यार्थी छन्द विषय के न केवल गूढ़ ग्रन्थों को ही, वरन् नए छन्दों को भी भली भाँति जान जायँगे।

छन्द-रत्नावली

प्रथम अध्याय

छन्द-रचना

(१) सामान्य ज्ञान—छन्दों के पहचानने, सुन्दर बोलने, गाने और रचने के लिए पहले इन सामान्य विषयों का जानना आवश्यक है—अक्षर या वर्ण, गुरु-लघु, गुण, मात्रा, गति, यति चरण और तुक।

अक्षर

(२) ध्वनियाँ (Sounds)—भाषाएँ ध्वनियों से बनती हैं। ध्वनियाँ दो प्रकार की होती हैं। एक जो अकेली बोली जा सकती हैं, उनको स्वर कहते हैं। जैसे 'आ, ओ' दो ध्वनियां हैं। दोनों किसी दूसरी ध्वनि का सहारा लिये बिना अकेली अकेली
, ओ। दूसरी वे ध्वनियाँ होती हैं जो स्वरों के
ती हैं, अकेली नहीं, उनको व्यञ्जन कहते

जैसे—'जागो' ये चार ध्वनियाँ हैं—'ज् आ ग् ओ' इन में से ज् आ के साथ और ग् ओ के साथ बोला गया है। यदि आ, ओ को छोड़ कर बोलें, तो उच्चारण होगा ज ग। ये फिर चार ध्वनियाँ हो गईं—ज् अ ग् अ। अ पश्चात् अन्त में बोला गया। क्योंकि व्यञ्जन का अपना निज रूप इतना छोटा होता है कि वह एक पूरा उच्चारण नहीं बनाता। पर हर एक स्वर एक पूरा उच्चारण होता है।

३—अक्षर एक पूरा उच्चारण होता है। स्वर अकेला भी और अपने साथ बोले जाने वाले व्यञ्जन या व्यञ्जनों समेत भी एक अक्षर होता है। आओ, जाओ, जागो, त्यागो, चारों पद दो दो बार के उच्चारण हैं—आ ओ, जा ओ, जा गो, त्या गो। सो चारों पद दो दो अक्षर के हैं। पर ध्वनियाँ क्रमशः पहले में दो आ ओ, दूसरे में तीन—ज् आ ओ, तीसरे में चार ज् आ ग् ओ, चौथे में पाँच—त् य् आ ग् ओ। सारांश यह कि हिन्दी में स्वर ११ हैं—अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ। ये ११ अक्षर हैं। जैसे अब, आज, इस, ईश, उस, ऊन, ऋषि, एक, ऐसा, ओस, और इन सब में आदि स्वर एक अलग अक्षर है और स्वर से पूर्व एक या अनेक व्यञ्जन हों तो भी उन समेत ये एक एक ही अक्षर होते हैं। जैसे 'क, का, कि, की, कु, कू, कृ, के, कै, को, कौ' ये भी एक एक अक्षर हैं। 'मुक्त, मुक्ति, लक्ष्मी' इन में क्त, क्ति क्ष्मी भी एक एक अक्षर हैं। अन्त में यदि व्यञ्जन हो तो वह अलग नहीं गिना जाता अपितु पूर्व

स्वर का अङ्ग ही हो जाता है। सो 'ओम' एक अक्षर है।

गुरु लघु

गुरु बड़ा या भारी; लघु छोटा या हलका। (क) ह्रस्व (छोटे) अक्षर लघु होते हैं। सो अब, इन, उस, ऋषि में आदि के अ, इ, उ, ऋ; और कब, किस, कुल, कृषि में आदि के क, कि, कु, कृ, तथा क्रम, क्रिमि, श्रुति, स्मृति में आदि के क्र, क्रि, श्रु, स्मृ लघु हैं। (ख) दीर्घ अक्षर सब गुरु होते हैं। सो 'आज, ईश, ऊन, एक, ऐश्वर्य, ओस, और' में आदि के आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, तथा काम, कीर, कूल, केश, कैसा, कोस, कौरव में आदि के का, की, कू, के, कै, को, कौ और ग्लास, श्रीश, भ्रूर, ग्रेश, ग्लौच में आदि के ग्ला, श्री, भ्रू, ग्रे, ग्लौ गुरु हैं।

४—अपवाद (क) ह्रस्व लघु कहा है, पर जिस ह्रस्व के परे संयोग, अनुस्वार * या विसर्ग हो वह गुरु होता है। जैसे 'कुत्ता, कंस, दुःख' में 'कु, कं, दु' गुरु हैं, क्योंकि संयोग से पूर्व ह्रस्व पर ज़ोर पड़ता है इस लिए वह गुरु हो जाता है और कं का भी बोलने में स्पष्ट गुरु प्रतीत होते ही हैं। (ख) पाद के अन्त का लघु भी, आवश्यकता हो तो, गुरु पढ़ा और गिना जाता है। जैसे—डोला तुम्हारी मति द्वि विचित्र।

(भानु कवि)

---

* अनुस्वार वाले लघु गुरु माने जाते हैं, पर चन्द्रबिन्दु वाले [illegible] जैसे—

यह इन्द्रवज्रा वृत्त का एक चरण है। इसके अन्त में दो गुरु होने चाहियें। यहाँ अन्तिम दो अक्षरों में चि से परे त्र सयोग है, इस लिए 'चि' गुरु है, पर 'त्र' लघु है। इस पादान्त लघु को गुरु माना और पढ़ा जायगा क्योंकि यहाँ गुरु वर्ण आवश्यक है।

(ग) सयोग से पूर्व के हलपर यदि जोर न पड़े तो वह लघु ही माना जाता है। जैसे—

'लीला तुम्हारी अति ही विचित्र'।

यहाँ तुम्हारी के तु को सयोग से पूर्व होने पर भी लघु माना गया, क्योंकि यहाँ तुम्हारी 'तुमारी' सा पढ़ा जाता है, और तु पर जोर नहीं पड़ता। स्मरण रहे कि न्ह, म्ह से पूर्व लघु प्राय' हलका पढ़ा जाता है।

सादर कहहिँ सुनहिँ बुध ताहीं।

यह चौपाई का एक चरण है। इसकी मात्रायें १६ होनी चाहियें। अब यदि हिँ, हिँ को गुरु मानें, तो मात्रायें १८ हो जाती हैं। अनुस्वार एक अलग ध्वनि है जो स्वर के उच्चारण के पीछे नासिका में उत्पन्न होती है, पर चन्द्रबिन्दु कोई ध्वनि (वर्ण) नहीं। किन्तु स्वर दो प्रकार से बोले जाते हैं एक अकेले मुख से, दूसरे नासिका की सहायता से। इन दूसरों को अनुनासिक कहते हैं और चन्द्रबिन्दु इस बात का चिह्न होता है कि यह स्वर अनुनासिक (नाक की सहायता से) बोला गया है।

गुरु-लघु-चिह्न

६—गुरु का चिह्न लहरदार रेखा 'ऽ' और लघु का चिह्न खड़ी उडी '।' होता है। जैसे ऽ। का अर्थ है पहला गुरु, दूसरा लघु। इसके उदाहरण होंगे—राम, विष्णु, कंस, कुंज इत्यादि। लक्षणों में गुरु के लिए 'ग' और लघु के लिए 'ल' बोला जाता है।

मात्रा

७—छन्दों में लघु की एक मात्रा और गुरु की दो मात्राएँ मानी जाती हैं। उदाहरण—'हर' दो लघु=दो मात्राएं। 'हीर' पहला गुरु दूसरा लघु=तीन मात्राएं। 'हीरा' दोनों गुरु=चार मात्राएं। 'हीरादेवी' चार गुरु=आठ मात्राएँ। मात्रिक छन्दों में इसी प्रकार गुरु की दो और लघु की एक मात्रा गिन कर मात्राओं की गिनती पूरी की जाती है। जैसे—

। । । । । । ऽ । । ऽ । ऽ ।
तुम मम मन अगम्य अनादि रूप' में १६ मात्राएं हुई।

गण

८—मधुर-छन्दों में गुरु लघु के स्थान नियत होते हैं। अब यदि एक एक अक्षर करके गुरु लघु के स्थान बतलाएँ, तो लक्षण सरलता नहीं रह सकेंगे। हाट भूल जाया करेंगे। इस का उपाय छन्दशास्त्रियों ने यह सोचा है कि तीन तीन अक्षरों का एक एक गण मान लिया है। अब ये तीनों अक्षर तीन

गुरु भी हो सकते हैं, तीन लघु भी हो सकते हैं, एक गुरु दो लघु भी हो सकते हैं इत्यादि भेद से उनके ये आठ भेद हो सकते हैं। १ सर्व गुरु ऽऽऽ, २ सर्वलघु ।।।, ३ आदि गुरु ऽ।।, ४ आदि लघु ।ऽऽ, ५ मध्य गुरु ।ऽ।, ६ मध्यलघु ऽ।ऽ, ७ अन्तगुरु ।।ऽ, ८ अन्तलघु ऽऽ।, अब और कोई भेद नहीं हो सकता। ये गिनती में आठ गण और तुलना में चार जोड़े बने हैं। सर्वगुरु और सर्वलघु का पहला जोड़ा, आदि गुरु और आदि लघु का दूसरा, मध्य-गुरु और मध्य-लघु का तीसरा, और अन्त-गुरु और अन्त-लघु का चौथा। इसी क्रम से इन आठ गणों के एक एक अक्षर के आठ नाम और दो दो मिलाकर चार जोड़े नाम रक्खे हैं—

म	न	भ	य	ज	र	स	त
ऽऽऽ,	।।।,	ऽ।।,	।ऽऽ,	।ऽ।,	ऽ।ऽ,	।।ऽ,	ऽऽ।
मन		भय		जर		सत	

हर एक अक्षर के आगे 'गण' लगाने से मगण, नगण भगण, यगण, जगण, रगण, सगण, तगण ये आठ गण बने।

चार जोड़े (मन भय जर स त) और यह क्रम याद रखना चाहिये।

पहला जोड़ा	मन	सर्वगुरु	सर्वलघु
		ऽऽऽ	।।।
दूसरा जोड़ा	भय	आदिगुरु	आदिलघु
		ऽ।।	।ऽऽ

तीसरा जोड़ा	जर	मध्यगुरु	मध्यलघु
		।ऽ।	ऽ।ऽ
चौथा जोड़ा	सत	अन्तगुरु	अन्तलघु
		।।ऽ	ऽऽ।

अथवा यह दोहा * याद कर लेना चाहिए—

आदि मध्य अवसान में, य र त सदा लघु मान।
क्रम से होते भ ज स गुरु म न गुरु लघु सब जान॥

अथवा इस सूत्र को याद रखना चाहिए—

यमाताराजभानसलग

इन में पहले आठ अक्षर गणों के हैं। अन्तिम दो (ल गं) लघु गुरु के हैं। सब के लक्षण भी इसी में घट जाएँ, इसके लिए मा ता रा भा दीर्घ और गं सानुस्वार रखा है। जिस गण का रूप जानना हो, उसके प्रतिनिधि अक्षर के आगे अगले दो अक्षर मिला देने से उसका रूप बन जाता है। जैसे यगण की पहचान के लिए य में अगले दो अक्षर मिलाए तो 'यमाता' हुआ। इस में आदि लघु और अन्त में दो गुरु हैं। यही यगण का रूप ।ऽऽ है। मगण की पहचान के लिए 'मातारा' लिया। ये तीनों गुरु हैं। यही मगण का लक्षण है। इस सूत्र के क्रम में आठवें सगण के लिए सलगं बना, तो आदि में दो लघु, अन्त में गुरु हुआ, यही सगण का लक्षण ।।ऽ है। अन्तिम दो अक्षरों में ल लघु का गं

* यह दोहा इस श्लोक का अनुवाद है।
आदिमध्यावसानेषु यरता यान्ति लाघवम्।
भजसा गौरवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम्॥

गुरु का वाचक है।

सो छन्दों के लक्षणों में जिस छन्द के अक्षर तीन पर पूरे विभक्त हो जाते हैं—जैसे ३, ६, ९, १२ इत्यादि, उनके लिए उसके रूप के अनुसार गण-अक्षर बोले जाते हैं। यदि तीन पर विभक्त होकर एक अक्षर बचे, तो उसके रूपानुसार 'ग' वा 'ल' बोला जाता है। ग=गुरु, ल=लघु। यदि दो बचें, तो उनके रूपानुसार ग ग = ऽ ऽ ल ल=॥, ग ल=ऽ।, ल ग=।ऽ बोले जाते हैं। नो लक्षणों में, मन भय जर सत गल, ये दस अक्षर बर्ते जाते हैं। जैसे कि इस दोहे में कहा है—

मय रस तज भन गल सहित, दश अक्षर इन सोहिं।
सर्वशास्त्र व्यापित लखौ, विश्व विष्णु सों ज्योंहिं॥
(भानु कवि)

साम्प्रदायिक मर्यादाएं

९—छन्द शास्त्रियों ने गणों के अलग अलग फल माने हैं। जिनके फल शुभ हैं वे गण शुभ और जिनके फल अशुभ हैं वे अशुभ माने जाते हैं। अशुभों को छन्द के आदि में नहीं रखते।

नीचे दो प्रमाण दिये जाते हैं। दो दोहे और एक गीतिका दोनों में पहले गण का नाम, फिर उसका देवता, पीछे फल बतलाया है। दोहे वा गीतिका में से कोई एक कण्ठस्थ कर लेना चाहिये।

(१) मगण भूमि लक्ष्मी य जल पावे आयु विशेष।
र पावक ताफल जलन, सगण वायु परदेश॥

सगण व्योम है शून्य फल, जगण भानु रुज होय ।
नगण स्वर्ग सुखप्रद, भ शशि, देत यशहिं है सोय ॥
(२) मगण पृथ्वी श्रीसफल थी, यगण जल आयुप्रद ।
रगण पावक दाह साफल, सगण वायु विदेशद ॥
सगण व्योम तु शून्य फल युत, जगण आदित रुजफल ।
नगण स्वर्ग सदा सुखप्रद, भ शशि देवे यश फल ॥

गणों के देवता, फल और शुभाशुभ का स्पष्टीकरण निम्न सारिणी से जानो ।

गण	रूप	उदाहरण	देवता	फल	शुभ अशुभ
१ मगण	SSS	कौशल्या	पृथ्वी	लक्ष्मी	शुभ
२ नगण	III	भरत	स्वर्ग	सुख	"
३ भगण	SII	लक्ष्मण	चन्द्र	यश	"
४ यगण	ISS	सुमित्रा	जल	आयु	"
५ जगण	ISI	महेशा	सूर्य	रोग	अशुभ
६ रगण	SIS	उर्मिला	अग्नि	दाह	"
७ सगण	IIS	विमला	वायु	विदेश	"
८ तगण	SSI	आकाश	आकाश	शून्य	"

शुभाशुभ अक्षर

१०—स्वर सभी शुभ माने जाते हैं।

व्यञ्जनों में ये १८ शुभ हैं—

क ख ग घ । च छ ज । द । द ध न । य । श स ।

और ये १९ अशुभ हैं—

ङ । झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ । प फ ब भ म । र ल
व । ष ह ।

अशुभ अक्षरों में भी झ भ र ष ह, इन पाच अक्षरों को अधिक हानिकर माना है । अशुभ गणों और अशुभ अक्षरों को छन्द के आरम्भ में नहीं रखते । पर देवता या मङ्गलवाची शब्दों के प्रयोग में यह दोष नहीं रहता और अशुभ अक्षर दीर्घ हो, तो भी दुष्ट नहीं माना जाता । जैसे पहला अक्षर झ दूषित है, पर झा दूषित नहीं होता । यदि किसी वर्ण वृत्त में लक्षण के अनुसार आदि में अशुभ गण आता ही हो तो वह दुष्ट नहीं माना जाता ।

मात्रिकगण

११—प्राचीन छन्द लक्षणों में मात्रिकछन्दों के पाच गण 'ट ठ ड ढ ण' मान कर लक्षणों में उनको वर्ता है । ६ मात्राओं के लिए ट, पांच के लिए ठ, चार के लिए ड, तीन के लिए ढ, दो के लिए ण, पर आज कल ये नहीं वर्ते जाते । मात्राओं की गिनती ही कह दी जाती है ।

गति-यति

१२—(क) हर एक छन्द की एक चाल होती है; उसे गति कहते हैं । जैसे चौबोला के एक चरण में १५ मात्राएं होती हैं और अन्त में लघु गुरु होते हैं । सो यदि हम यह पाठ पढ़ें—

सदा उन्नति की गैल गहो ।
समाज में नेता बन रहो ॥

तो यह चौबोला छन्द नहीं कहलाएगा । इसी को जब

ऐसा पढ़ें—

गल सदा उन्नति की गहो।
नेता बन समाज में रहो॥

तो इस में चौबोला की गति आ जाती है। गति को कान पहचानते हैं और यह पहचान अभ्यासवश होती है।

(ग) यति विराम अथवा ठहराव को कहते हैं। पाद के अन्त में तो सभी छन्दों के यति होती है, पर बड़े छन्दों में एक ही पाद में दो या तीन यतियां होती हैं। यति के अनुसार विराम करके बोलने से छन्द अधिक सुहावने बन जाते हैं। देखो शिखरिणी और मन्दाक्रान्ता के उदाहरण (पृष्ठ ७)।

चरण

१२—(क) छन्द की एक पूरी चाल को चरण, पाद या पद कहते हैं। चरण प्रायः चार होते हैं। जैसे—

(१) ७ मात्राओं का सुगति छन्द।

शिव शिव कहो, यदि सुख चहो।
जो सुमति है सो सुगति है॥
'भानुकवि'

(२) २६ मात्राओं का गीतिका छन्द।

धर्म के मग में अधर्मी से कभी डरना नहीं।
चेत कर चलना कुमारग में कदम धरना नहीं॥
शुद्ध भावों में भयानक भावना भरना नहीं।
बोधवर्द्धक लेख लिखने में कमी करना नहीं॥
'नाथूराम शङ्कर'।

'प्राय' कहने का अभिप्राय यह है कि चार चरणों का नियम सार्वत्रिक नहीं। कुण्डलिया छन्द छह चरण का होता है। लोकोक्तियां कई एक एक चरण की प्रसिद्ध हैं।

(ख) दोहा, सोरठा आदि जो छन्द दो दो पंक्तियों में लिखे जाते हैं, उनकी हर एक पंक्ति को दल कहते हैं।

अन्त्यानुप्रास वा तुक

१४—पादान्त के अक्षरों के मेल को तुक कहते हैं। तुक के बिना भी छन्द प्यारे लगते हैं। वाल्मीकि, कालिदास आदि संस्कृत के प्रसिद्ध कवियों ने तुक का मिलान नहीं किया, तो भी उनके छन्द बड़े सरस हैं। कारण यह कि एक तो वे छन्द की गति-यति को पूरे तोल में लाते हैं, दूसरे उनकी कविताएं रसपूर्ण होती हैं। पर यह भी भूलना नहीं चाहिए कि तुक के मेल में रस बढ़ ही जाता है। संस्कृत के कवियों ने जहां जहां अन्त्यानुप्रास (तुक) बर्ता है, वहां माधुर्य बढ़ ही गया है। गीत में तो तुक बहुत जरूरी मानी गई है। संस्कृत में चर्पटपंजरी और गीतगोविन्द ये दो प्रसिद्ध गीत-ग्रन्थ हैं। इन में तुक पर सर्वत्र पूरा ध्यान दिया है। हिन्दी कविता में आरम्भ ही से तुक के मिलान पर पूरा ध्यान रक्खा है, अतएव हिन्दी में बिन तुक के छन्द नाममात्र हैं, पर हैं सही। सो एक भेद तो बिन तुक के छन्दों का हुआ, दूसरा तुक वालों का। तुक वालों के फिर पांच भेद हैं। (१) चारों चरणों में तुक का मेल (२) पहले दूसरे, तीसरे चौथे और यदि छः चरण हों तो पांचवें छठे चरणों की तुकों का मेल (३) सम चरण

(२, ४, ६) की तुकों का मेल (४) विषम चरणों की तुक का मेल। (५) दो शब्दों की तुक का मेल। इन सब के उदाहरण क्रमशः नीचे दिए जाते हैं।

(क) निम्नलिखित दोनों तुक-हीन पद्य क्रमशः द्रुतविलम्बित और मन्दाक्रान्ता वृत्तों में हैं।

(१) किस तपोबल से किस काल में।
सच बना मुरली कलनादिनी॥
अवनि में तुझ को इतनी मिली।
मधुरता, मृदुता, मनोहारिता॥

(२) जा के आगे, यदि सदन में, बैठ जाता कहीं भी।
तो तन्मयी, उस सदन की, यों उसे भी सुनाती॥
जो आते हों, कुँवर उधो, आप तो बैठ जा तू।
मैं खाने को, प्रतिदिन तुझे, दूध औ भात दूँगी॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

(ख) चारों चरणों में समान तुक वाले।

दिक्पाल छन्द

पीछे कदम उठा भी हट के न जानते हैं।
रणभूमि में दुखी ने निज प्राण डालते हैं॥
दीपक पतंग का, जब पीर पालते हैं।
तब वे कहीं अँधेरा, घर में निकालते हैं॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

रोला छन्द

शशि बिन सूनी रैन, ज्ञान बिन हिरदे सूनो।
कुल सूनो बिन पुत्र, पत्र बिनु तरुवर सूनो ।
गज सूनो इक दन्त, और बन पुहुपबिहूनो।
विप्र सून बिन वेद, ललित बिन शायर सूनो।
इस में तुक 'ऊनो' है। (बैताल)

(ग) क्रमशः दो दो पदों की तुक।

चौपाई

(१) शठ सुधरहिँ सतसङ्गति पाई।
पारस परसि कुधातु सुहाई ॥
विधि बस सुजन कुसङ्गति परहिँ।
फणिमणिसम निजगुण अनुसरहिँ॥
(तुलसीदास)

(२) रहिये लटपट काटि दिन, बरु घामे मा सोय।
छाँह न वा की बैठिये, जो तरु पतरो होय॥
जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा देहै।
जा दिन बहै बयारि, टूटि तब जर से जैहै॥
कह गिरिधर कविराय, छाँह मोटे की गहिये।
पत्ता सब झरि जाय, तऊ छाँहैं मा रहिये।
(गिरिधर कविराय)

(घ) सम चरणों (२, ४, ६) की तुक—

विधाता छंद

अनोखी बात है तेरे निराले प्रेम बन्धन में।
उलझ कर भक्त उलझन में जगत को पार करते हैं॥
न होती आह तो मेरी दया का क्या पता होता।
उसी से दीन जन दिन रात हाहाकार करते हैं॥
हमें तू सींचने दे आँसुओं से पेड़ जीवन का।
जगत के ताप का हम तो यही उपचार करते हैं॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

सोरठा

(ङ) विषम चरणों की तुक—

रहिमन, मोहि न सुहाय, अमी पियावत मान बिन।
बरु बिष देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो॥

(रहीम)

(च) दो दलों की तुक का मेल—

दोहा

जनता चाहो वीर जो, करना गौरव-त्राण।
या कर धारो लेखनी, या निज हाथ कृपाण॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

चरणान्तों की तुकों के अतिरिक्त चरण के बीच की यतियों में भी कहीं तुक पाई जाती है। जैसे—

सवैया

माला, पुनि चोटी, औ मनि जोटी, लखहु लाल यह रूपा।

कीजे शिशुलीला, अतिप्रियशीला, यह सुख परम अनूपा ॥
सुनि वचन सुजाना, रोदन ठाना, ह्वै बालक सुररूपा ।
यह चरित ज गावहिं, हरिपद पावहिं, तेन परहिं भवकूपा॥
(तुलसीदास)

छन्दों के भेद

छन्दों के चार मुख्य भेद हैं—मात्रिक, अक्षर, उभय और मुक्त व स्वच्छन्द ।

(क) मात्रिक छन्दों में मात्राओं का तोल होता है। इसके अवान्तर भेद तीन हैं—सम, अर्धसम और विषम। जिनके चारों चरणों में एक ही लक्षण घटे, वे सम, जिनके पहले चरण का लक्षण तीसरे के साथ और दूसरे का चौथे के साथ मिले, वे अर्धसम, और इन दोनों से भिन्न विषम कहलाते हैं। मात्रिक का दूसरा नाम जाति है।

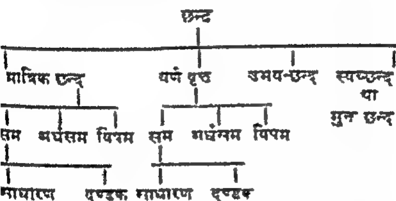
(ख) अक्षर छन्दों में अक्षरों का तोल होता है। इनके भी मात्रिकवत् तीन अवान्तर भेद होते हैं—सम, अर्धसम और विषम। अक्षर छन्दों का दूसरा नाम वर्णवृत्त है। मात्रिक छन्द और वर्णवृत्त इन विभिन्न शब्दों के प्रयोग से दोनों में भेद अधिक स्पष्ट रहता है, इसलिए अक्षर छन्द के स्थान पर प्रायः वर्णवृत्त प्रयुक्त होता है।

मात्रिक सम और वर्ण सम छन्दों के दो दो अवान्तर भेद हैं—साधारण और दण्डक। मात्रिक छन्दों में ३२ मात्राओं तक साधारण, उसके आगे दण्डक, और वर्णवृत्तों में २६ वर्णों तक साधारण और उसके आगे दण्डक कहे जाते हैं।

(ग) उभय छन्दों में मात्रा नियम और वर्ण-संख्या दोनों का ध्यान रक्खा जाता है।

(घ) स्वच्छन्द छन्दों में दृष्टि केवल लय पर रहती है, और कोई बन्धन नहीं होता।

नीचे के छन्दो वृक्ष में इन भेदों का स्पष्टीकरण है।



मात्रिक छन्द आरम्भ तो एक ही मात्रा से हो जाते हैं, जैसे-एकमात्रिक क, ख। ग, घ। द्विमात्रिक-आप नप। जब, सब। अथवा-आ, ना। जा, हा। इसी प्रकार वर्णवृत्त भी एक वर्ण से आरम्भ होते हैं। पर ऐसे छन्द खाड-प्यार के हैं। इन में कोई वर्णन पूरा नहीं होता। यथार्थ कहने के लिए मात्रिक छन्द छह मात्राओं से और वर्णवृत्त प्राय छह वर्णों से आरम्भ होते हैं। छह मात्राओं वाले पादांत का उदाहरण—राग द्वेष। उभय भूरा। दम विनीत। करुणेश॥ और छह वर्णों का दिग्दर्शन—इस जीवन में, यहाँ सब में॥ सब संभव है। सब यथा सब है॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

अब छन्दों के प्रत्येक प्रकार के उदाहरण दिए जाते हैं

(१) मात्रिक समछन्द—२८ मात्राओं का विधाता छन्द

मलाई को न भूलेंगे सुशिक्षा को न छोड़ेंगे।
हठीले प्राण खो देंगे, प्रतिज्ञा को न तोड़ेंगे॥
बढ़ेंगे प्रेम के पौधे, दया के फूल फूलेंगे।
भरे आनन्द से चारों, फलों के झाड़ झूलेंगे॥

(नाथूराम शंकर)

(२) मात्रिक अर्धसम दोहा। चार चरणों में क्रमश, मात्राएं १३, ११। १३, ११।

प्रातहिं उठिके नित्य नित करिये प्रभु को ध्यान।
जाते जग में होहि सुख, अरु उपजै सत ज्ञान॥

(३) मात्रिक विषम १५२ मात्राओं का छप्पय छन्द।

जहां स्वतन्त्र विचार न बदलें, मन में मुख में।
जहां न बाधक बनें सरल निजगों के सुख में॥
सब को जहां समान निजोन्नति का अवसर हो।
शान्तिदायिनी निशा हर्षसूचक वासर हो॥
सब भांति सुशासित हों जहां, समता के सुखकर निय
बस, उसी स्वतन्त्र स्वदेश में, जाग हे जगदीश हम

(रामनरेश त्रिपा

(४) वर्ण समवृत्त-भुजंगी (य य य ल ग वर्ण ११)

समुत्थान का ज्ञान ही मूल है।
इसे भूल जाना बड़ी भूल है॥
सुशिक्षा जहां है वहीं सिद्धि है।

जहा सिद्धि होगी यहीं वृद्धि है ॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

(४) वर्णार्धसम—पुष्पिताग्रा—(विषम चरण न न र य, सम चरण न ज ज र ग)

फिरि फिरि भ्रमि कै कहूँ नवेली ।
विधि गह कौन प्रकार की चमेली ॥
रँग धरति कमल-पाँखुरी के ।
सुपति सु पुष्पित भाग भाँवरी के ॥

(भिखारीदास)

(५) वर्ण-विषम—सौरभक—(प्रथम चरण स ज स ल; द्वितीय न स ज ग, चतुर्थ स ज स ज ग)

सब त्यागिये असत काम । शरण गहिये सदा हरी ।
सरैं सुख सब आँव टरी । भजिये सदा निशि हरी हरिहरी

(भानुकवि)

उभय-छन्द

(मात्रिक हरिगीतिका में वर्ण-संख्या समान)

कवि, व्यास, वाल्मीक, दयाकर, वासु, वरदा-नन्द हैं ।
गुणधाम, सत्य, सुधर्म, सच्चित, सर्वप्रिय स्वच्छन्द हैं ॥
भगवान भावुक भक्त वत्सल, प्रभु, विभु, भुवनेश हैं ।
करतार, तारक हैं सुरी यह वेद का उपदेश है ॥

(नाथूराम शङ्कर)

मुक्त छन्द

भर देते हो—

बार-बार प्रिय, करुणा की किरणों से,
क्षुब्ध हृदय को पुलकित कर देते हो।
मेरे अन्तर में आते हो देव निरन्तर,
कर जाते हो व्यथा भार लघु
बार-बार कर-कञ्ज बढ़ा कर,
अन्धकार में मेरा रोदन,
सिक्त धरा के अञ्चल को,
करता है क्षण क्षण—
कुसुम-कपोलों पर वे लोल शिशिर कण;
तुम किरणों से अश्रु पोंछ लेते हो।
नव प्रभात जीवन में भर देते हो॥

(सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला')

द्वितीय अध्याय

मात्रिक-सम-छन्द (साधारण)

जिन मात्रिक छन्दों के चारों चरणों में मात्रा नियम समान हो, वे मात्रिक सम-छन्द होते हैं।

(१) तोमर

(क) मुख में मधुर उच्चार। कर में सदा उपकार॥
त्योंही हृदय में प्रीति। है सुजन की यह रीति॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

तोमर छन्द के प्रत्येक चरण में १२ मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक पद के अन्तिम दो वर्ण क्रमशः गुरु, लघु होते हैं। जैसे—

(ख) बहु भाँति पूजि सुराय। कर जोरि कै परि पाय॥
हँसि कै कह्यौ ऋषि-निधि। अब देहु राम पवित्र॥

(ग) गुरु ज्ञान मानस हंस। रघुवंश के अवतंस॥
मन मोह को अति मेहु। अब बसु माँगहि देहु॥

---

१. राजा दशरथ २. ऋषि विश्वामित्र।

(घ) मुनि ज्ञान मानस हंस। जप जोग जाग प्रशंस॥
जग माझ है दुख जाल। सुख है कहाँ इहि काल॥
(ङ) तहँ राज है दुखमूल। सब पाप को अनुकूल॥
अब ताहि लै ऋषिराय। कहि कौन नरकहि जाय॥
(च) कहुँ भाग बाग तड़ाग। अब देखिये बड़ भाग॥
फल फूल सों संयुक्त। अलि यों रमैं जनु मुक्त॥
(छ) सुनि रामचन्द्र कुमार। धनु आनिये यहि बार॥
पुनि वेगि ताहि चढ़ाय। यश लोक लोक बढ़ाय॥
(ज) सह भरत लक्ष्मण राम। बहुँ किये आनि प्रणाम॥
भृगुनन्द आशिष दीन। रण होहु अजय प्रवीन।
(झ) सुनु राम शील समुद्र। तव बन्धु है अति क्षुद्र॥
मम बाडवानल कोप। अब कियो चाहत लोप॥
(ञ) तुम क्यों चलो बन आजु। जिन शीश राजत राजु॥
जिय जानिये पतिदेव। करि सर्व भांतिन सेव॥

(केशवदास)

२ उल्लाला (अन्य नाम चन्द्रमणि)

उल्लाला छन्द के प्रत्येक पाद में १३ मात्राएँ होती हैं।

---

१ उल्लाला नामक एक मात्रिक अर्धसम छन्द और भी है। नाम-साम्य के कारण छात्र प्रायः गड़बड़ में पड़ जाते हैं। इस में तो सब चरणों में १३, १३ मात्राएँ होती हैं, परन्तु उस के विषम चरणों में १५, १५ और सम में १३, १३। इस में उस में यही अन्तर है।

पाद के अन्तिम वर्णों में गुरु लघु का कोई विशेष नियम नहीं होता। हाँ, ११ वीं मात्रा अवश्य लघु होती है। जैसे—

(क) डरना होगा ईश से, और दुखी की हाय से ॥
मिटना होगा टेक पर, रण अनीति अन्याय से ॥

(ख) पहली मंजिल मौत है, प्रेम पंथ है दूर का।
सुनता हूँ मन था यही, सूली पर मन्सूर का ॥

(ग) मन-मिलिन्द श्रुति वृन्द के, मकरन्द मचल इस पर गये ॥
प्राण गये तो इसी पर, न्योछावर हो कर गये ॥

(घ) जीवन में बस प्रेम हो, जिस का पारावार हो ॥
सत्य गले का हार हो, इतना उस पर प्यार हो ॥

(ङ) होगा मन व्याकुल कहीं, इस अपमानित शृंगार में ॥
अपने आग्रह पर अटल, रहना बस प्रहार से ॥

(च) दुख में भी सुख शान्ति का, नव अनुभव हो जायगा ॥
प्रेम-सलिल से हृदय का, सारा मल धो जायगा ।

(प० गयाप्रसाद शुक्ल)

२. सखी

सखी छन्द के प्रत्येक पाद में १४ मात्राएँ होती हैं। हर एक चरण के अन्त में प्राय मगण (ऽऽऽ) या यगण (।ऽऽ) का होना आवश्यक है। जैसे—

(क) आदर्श-आम में भूले,
अनुराग-बाग में माली।

१—भ्रमर।

क्यों ध्यान-मग्न तुम बैठे,
भर कर फूलों से डाली ॥

(ख) सुन्दर फूलों की कुड़ियाँ,
झर-झर तुम पर झरती हैं।
नत-मस्तक वृक्ष खड़े हैं,
पत्तियाँ पवन करती हैं ॥
(गुलाबरत्न वाजपेयी)

(ग) क्यों छलक रहा दुख मेरा,
ऊषा की मृदु पलकों में।
हा! उलझ रहा सुख मेरा,
सन्ध्या की घन अलकों में॥

(घ) उच्छ्वास और आँसू में,
विश्राम थका सोता है।
रोई आँखों में निद्रा,
बन कर सपना होता है॥

(ङ) सन्ध्या की मिलन प्रतीक्षा,
कह चलती कुछ मनमानी।
ऊषा की रक्त निराशा,
कर देती अन्त कहानी॥

(च) फिर विश्व मांगता होवे,
ले नभ की खाली प्याली।
तुम से कुछ मधु की बूँदें,

लौटा लेने को खाली ॥

(जयशङ्कर प्रसाद)

(ङ) सब घर घर की ब्रजनारी।
दधि गोरस बेचनहारी ॥
मिल जुरथ सबै मग कीन्हा ।
जमुना-तट मारग लीन्हा ॥

(ब्रजवासी दास)

८. हाकलि

हाकलि छन्द के हर एक चरण में १४ मात्राएं होती हैं। अन्तिम वर्ण गुरु होता है। इस के पहले तीन चौकलों के अनन्तर एक गुरु आता है। जैसे—

(क) "पावन-कारन जीवन का,
मुझ को धाम मिला वन का।
जाता हूँ मैं अभी वहीं,
राज्य करेंगे भरत यहीं ॥"

(ख) गोरे मुखड़े घूँघट की
छिटकी अम्बरोपम पट की,
चाँदनि चारों की शिशु-मुख की,
सीमा की सुषमा सुख की।

(ग) [illegible] कहा।
[illegible] कहा।
[illegible] कहा।

कुंद-कली-से रदन अहा !

(मैथिली शरण गुप्त)

जहां सब चरणों में तीन तीन चौकल नहीं होते, वहाँ इसी छन्द को मानव कहते हैं। जैसे—

मानव

(क) सीता ने सोचा मन में—
"स्वर्ग बनेगा अब वन में !
धर्मचारिणी हूंगी मैं,
वनविहारणी हूंगी मैं ॥"

(ख) साँप सिलाती थीं अलक,
मधुप पालती थीं पलकें,
और कपोलों की झलकें,
उठती थीं छवि की छलकें !

(ग) "मँझली माँ ! तू मरी न क्यों ?
लोक-लाज से डरी न क्यों ?"
लक्ष्मण ने निःश्वास लिया,
माँ के जान सु-वास लिया !

(मैथिली शरण गुप्त)

५. मधुमालती

---

१ ऊपर १४, १४ मात्राओं के तीन छन्द दिये गये हैं—सखी, शाकलि और मधुमालती। एक तो तीनों की यति पृथक् पृथक् है और दूसरे सखी के अन्त में मगण (SSS)

मधुमालती छन्द के प्रत्येक पाद में १४ मात्राएँ होती हैं। यति (विराम) सात, सात मात्राओं पर होती है। प्रत्येक पाद के अन्त में रगण (ऽ।ऽ) होता है। जैसे—

(क) है कार्य यूँ, मैं न थकूँ भी
किस भाँति सों, जायें अभी।
क्या नींद में, चढ़ी आयगी,
यह रात यों, ही जायगी॥

(ख) सन्ध्या समय ऐसे थके
हम और गाड़ी से सके,
जिस में कि हम, फिर जब चले:
गोस्वामी पा यों से मिले॥

(सियाराम शरण गुप्त)

साधारणतः पूर्ण शब्द के अन्त में ही यति आती है परन्तु इन पद्यों में कहीं कहीं शब्दों के मध्य में भी यति पड़ती है। सच तो यह है कि वर्तमान कवि यति-विषयक नियमों की विशेष परवा भी नहीं करते।

या पाद (।ऽऽ), हरिगीतिका के अन्त में एक गुरु वर्ण और मधुमालती के अन्त में एक लघु होता है। इन का एक दूसरे से यही भेद है।

१—यहाँ पर सात्त्विक ने शब्द का विभाग करके ही लिपिबद्ध कर दिया है।

६. चौबोला

चौबोला छन्द के प्रत्येक चरण में १५ मात्राएँ होती हैं। अन्तिम दो वर्ण क्रमशः लघु गुरु होते हैं। जैसे—

(क) मित्र सफल निज जीवन करो
हृदय बीच शुभ गुण-गण धरो।
मेल सदा उन्नति की गहो,
नेता बन समाज में रहो ॥
(रामनरेश त्रिपाठी)

७ चौपई (अन्यनाम—जयकारी)

चौपई के प्रत्येक पाद में १५ मात्राएँ होती हैं। हर एक चरण के अन्तिम दो वर्ण क्रमशः गुरु लघु होते हैं। जैसे—

(क) करके शिक्षा-कार्य समाप्त,
विद्यालय की पदवी प्राप्त
फिर तुम ग्रामों में कर वास,
ग्रामीणों का करो विकास ॥

(ख) हिन्दू युवक उठो तुम आज,
रक्खो निज समाज की लाज।
हो तुम पर विभु की वर वृष्टि,
लगी तुम्हीं पर आशा दृष्टि ॥

(ग) आँखें मूँद न पीटो लीक,
सोच समझ देखो तुम ठीक।
करो न असमय का आलाप,

जो तुम को ही करें न आप ॥

(घ) आत्म-संगठन करो सयुक्ति,
जिससे तुम्हें मिलेगी मुक्ति।
आवेगी तुम में वह शक्ति,
जिस पर हो सब की अनुरक्ति ॥

(ङ) पावें सभी प्रबोध, प्रमोद,
रहें मातृ भू की गोद।
मिटें परस्पर के सन्देह,
उपजे आत्म-भाव सस्नेह ॥

(च) क्या शासन क्या न्याय विभाग,
क्या यूरप की भी यह आग।
जिस में जले जगत के वीर,
सिद्ध हुए हम वहीं अधीर ॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

८. गोपाल (अपर नाम-भुजंगिनी)

गोपाल के प्रत्येक पाद में १५ मात्राएँ होती हैं और अन्त में जगण। जैसे—

---

१. अपर १५ १५ मात्राओं के तीन छन्द लिए गए हैं—चौबोला, चौपई और गोपाल। चौबोला के अन्त में लघु, गुरु, चौपई के अन्त में गुरु लघु और गोपाल के अन्त में जगण (।ऽ।) होता है। इन के अतिरिक्त [illegible] अन्तर हो सकता है।

इस के आगे ? निदा विशेष,
हुए दम्पती फिर अनिमेष।
किन्तु जहाँ है मनोनियोग,
वहाँ कहाँ का विरह वियोग ?

(मैथिली शरण गुप्त)

९ पादाकुलक

पादाकुलक के प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं। हर एक चरण में चार चार झौक्ष्ठ होते हैं। जैसे—

(क) वायस पालिय अति अनुरागा।
होइ निरामिष कबहुँ कि कागा॥
सन सहहिँ दुख परहित लागी।
पर दुख हेतु असन्त अभागी॥

(ख) सेवक सुख चह मान भिखारी।
व्यसनी धन सुभगति व्यभिचारी
लोभी जस चह चारु गुमानी।
नभ दुहि दूध चहत ये प्रानी॥

(ग) सुमति कुमति सब के उर रहहीं
नाथ पुरान निगम अस कहहीं॥
जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना
जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना

(घ) बिन गुरु विग मन होइ कि थी
परस कि होइ विहीन समीरा।

कवनिउँ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा।
बिनु हरि भजन कि भवभय नासा॥

(तुलसीदास)

(ङ) सुभ सर सोभै मुनि मन लोभै।
सरसिज फूले अलिरस भूले॥
जलचर डोलैं बहु खग बोलैं।
बरनि न जाहिं उर अरुझाहीं॥

(केशवदास)

उपर्युक्त पदों के प्रत्येक चरण में चार चार चौकल हैं। उदाहरण के लिए '(ङ)' पद के प्रथम चरण की ही परीक्षा करलें।

सेवक = ऽ।। = ४ मात्रा का कला (चौकल)
सुख पद = ।।।। = " " "
मामनि = ऽ।। = " " "
वारी = ऽऽ = " " "

१०. पद्धरि

पद्धरि छन्द, पादाकुलक का ही एक भेद है। इसके प्रत्येक पाद के अन्त में जगण अवश्य होता है। जैसे—

(क) मकरन्द कन्द, करुणानिधान,
हे विश्वबन्धु सब शक्तिमान।
यह दीन दास अब है तुम्हारा,
प्रभु दीजे काटिये मोह-फन्दा॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

(ख) पर इन विहँगों में एक कीर।
था अग्रगण्य अति धीर वीर॥
तरु पर नितान्त रह कर स्वतन्त्र।
नित जपता था वह यही मन्त्र॥
(ग) "जब तक है तन में प्राण शेष।
तब तक न तजूँगा मैं स्वदेश॥
तज अहंभाव का घृणित गर्व।
इस पर वारूँ सब कुछ सगर्व॥"
(घ) रथ को तज धर कर विप्र-वेष।
शुक निकट पहुँच बोले सुरेश॥
'तू क्यों देता है यहां प्राण।
जा अन्य स्थल को शुक सुजान॥"
(ङ) "मैं जन्मा था इस पर अबोध।
पाया इस ही पर सुधि-बोध॥
इसने ही दे कर बल विशेष।
है सिखलाया उड़ना सुरेश॥
(च) ये मृदुल मृदुल हैं याद डाल।
जिन पर बीता था बाल काल॥
ये मौर युक्त वे छद्न लाल।
कैसे भूलूँगा वे रसाल॥
(छ) खा कर जिन को मैं शुकी संग।
यौवन में करता राग रंग॥
हैं याद मुझे वे दिन अतीत।

होती अब वर्षा धाम क्षीण ॥
(अ) यह स्वच्छ नहिन कर मर्म क्लेश।
था मुझे पचाता है सुवेश ॥
अब हुआ अकिञ्चन यहीं आज।
अब मिटे नित्य के गौण्य साज ॥
(इ) तब छोड़ उसे जाना सुदेश।
है मानो हिम अपयश विशेष ॥
इन को तजना अति निज धर्म।
इस पर मर मिटना है स्वधर्म ॥
मैं इसे न त्यागूँ गुणागार।
चाहे तन त्यागे प्रभु अधीर ॥"

(गोविन्ददास)

११. चौपाई

चौपाई के प्रत्येक चरण में १६ मात्राऐं होती हैं। इस में गुरु-लघु या चौकलों का कोई नियम नहीं होता। चौपाई की

१ पादाकुलक और चौपाई छन्दों की गति (चाल) बिल्कुल एक सी होती है। इस लिए इन का पहचानना कुछ कठिन होता है। पहचान का सरल उपाय यह है कि पादाकुलक के चरणों में चार चार चौकल अवश्य होते हैं और चौपाई में नहीं। ये दोनों छन्द साथ साथ लिखे भी जाते हैं। परन्तु जब १६ मात्रा चरणों में चौकलों का नियम पूरा न हो तब वह

रचना में इस बात का ध्यान अवश्य रखना है कि सम-कल के पीछे सम-कल आए। यदि कोई विषम कल आ जाए, तो उस के अनन्तर विषम कल रख कर समता कर ली जाती है। इसके पदों के अन्त में गुरु लघु (ऽ।) कभी न होने चाहिए। जैसे—

(क) बिनु सन्तोष न काम नसाहीं।
काम अछत सुख सपनेहु नाहीं॥
राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा।
थल बिहीन तरु कबहुँ कि जामा॥

(ख) सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी।
जो पितु मातु बचन अनुरागी॥
तनय मातु पितु तोषन हारा।
दुर्लभ जननि सकल संसारा॥

(ग) धन्य जन्म जगतीतल तासू।
पितहि प्रमोद चरित सुनि जासू॥
चारि पदारथ कर तल ताके।
प्रिय पितु मातु प्रान सम जाके॥

(घ) तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा।
जानत प्रिय एक मन मोरा॥
सो मन सदा रहत तोहि पाहीं।
जानु प्रीतिरस एतनेहि माहीं॥

(ङ) बरन धर्म नहिं आश्रम चारी।
श्रुति-बिरोध रत सब नर नारी॥

द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन।
कोउ नहिं मान निगम अनुसासन॥

(च) मारग सोइ जा कहँ जोइ भावा।
पंडित सोइ जो गाल बजावा॥
मिथ्यारंभ दम्भ-रत जोई।
ताकहँ सन्त कहहि सब कोई॥

(छ) सोइ सयान जो पर धन-हारी।
जो कर दम्भ सो बड़ आचारी॥
जो कह झूठ मसखरी जाना।
कलि-जुग सोइ गुनवन्त बखाना॥

(ज) निराचार जो श्रुति-पथ-त्यागी।
कलिजुग सोइ ग्यानी बैरागी॥
जाके नख अरु जटा बिसाला।
सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला॥

(तुलसीदास)

१२ गृहार्थ

१—[illegible] को [illegible] करके [illegible]।

२—प्रत्येक १६, १६ मात्राओं के इन चार छन्दों का विश्लेषण किया गया है- पादाकुलक, पद्धरि, चौपाई और [illegible]। संक्षेप में इनकी पहचान यों की जा सकती है। यदि प्रत्येक चरण में चार चार चौकल हों तो वह पादाकुलक है। यदि चौकलों का नियम और [illegible] का नियम पूरा [illegible] हो तो वह [illegible]

शृङ्गार छन्द के प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक पाद के प्रारम्भ में त्रिकल और द्विकल (३+२ मात्राएं) तथा अन्त में गुरु, लघु (ऽ।) अवश्य आने चाहिए। जैसे—

(क) हरित वन कुसुमित हैं द्रुम-वृन्द;
बरसता है मलयज मकरन्द।
स्नेहमय सुधा दीप है चन्द;
खेलता शिशु हो कर आनन्द॥
(जयशङ्कर 'प्रसाद')

(ख) गूँजते थे रानी के कान,
तीर-सी लगती थी वह तान—

पद्धरि समझना चाहिए, परन्तु वर्तमान कवि इसकी चाल (गति) को ही प्रधान मानते हैं और चौकल तथा जगण के नियमों की उपेक्षा भी कर देते हैं। यदि चौकल-नियम पूरा न हो और अन्त में गुरु, लघु न हों, तो वह चौपाई होगी। यदि चरणों के आदि में त्रिकल और द्विकल तथा अन्त में गुरु लघु हों तो उसे शृङ्गार समझना चाहिये।

छन्द पढ़ने वाले छात्रों को चाहिए कि वे छन्दों के उदाहरणों को ऊँचे स्वर से बार बार पढ़ा करें। इससे विविध छन्दों की चाल उनके मस्तिष्क में स्वयं ही अंकित हो जायगी और समय पाकर वे ध्वनि-मात्र से ही पता सकेंगे कि अमुक पद्य किस छन्द में है।

'भारत-से सुत पर भी सन्देह।
बुला सका न उन्हें जो गेह॥
(मैथिलीशरण गुप्त)

(ग) न रहता भौंरों का आह्वान,
नहीं रहता फूलों का राज।
कोकिला होती अन्तर्धान,
चला आता प्यारा ऋतु-राज॥

(घ) विकसने, मुरझाने को फूल,
उदय होता छिपने को चन्द।
शून्य होने को भरते मेघ,
दीप जलता होने को मन्द॥
(महादेवी वर्मा)

१३. चन्द्र

चन्द्र छन्द के चारों चरणों में १३, १० मात्रायें होती हैं। यति १० तथा ३ मात्राओं पर होती है। जैसे—

(क) पेट में डालने, हमें भी, ये।
जो खिलाते न कभी, फिर बाँधू॥
और किसी कोख में, क्यों गिर भी।
किस लिए कोख में, फिर बाँधू॥

(ख) राम हिय में है जाय माने वे।

१—अनुष्टुप् पद्य अन्यत्र।

(ख) दिया राघु के पाँव पंकज गहीं ।
विनायक सहायक सबै दिन चहीं ॥
मनौं राम मानद के चन्द्र को ।
दिया जिन कुसुम पौन के मंद को ॥
(श्री बल्दीराम)

१५. पीयूषवर्ष

पीयूषवर्ष के प्रत्येक पाद में १९ मात्राएँ होती हैं। १० और ९ मात्राओं पर यति होती है। चरणान्त में लघु, गुरु होते हैं। जैसे—

(क) प्रभु की है धार, जैसी मुरलियाँ,
ठीक जैसी धार, माया-मुरलियाँ।
धन्य हृदारण्य-प्रसव-पुष्पोत्कर है,
धन्य भगवद् भूमि, भारत-वर्ष है॥

(ख) छवि दयामय दृष्टि, सुन्दर शारद,
इधर औ निज शरद, पाणि पसार है,
सास की यह चढ़-नदी सार है,
रंग-साटे में नई झंकार है॥
(मैथिलीशरण गुप्त)

जहाँ इस छन्द में यति-नियम और चरणान्त लघु गुरु की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता, वहाँ इसे आनंद वर्धक कहते हैं। वर्तमान में पीयूषवर्ष की अपेक्षा आनन्दवर्धक का ही अधिक प्रचलन है। अतएव इस के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

आनदवर्धक

(क) हाय हम ने भी कुलीनों की तरह।
जन्म पाया प्यार से पाले गये ॥
जी-बचे फूले-फले तब क्या हुआ।
कीट से भी नीचतर माने गये ॥

(ख) छोड़ कर प्यारे पुराने धर्म को।
आज ईसाई मुसल्माँ हम बने ॥
नाथ, कैसा यह निराला न्याय है।
जो हमें सानन्द सब छूने लगे ॥
(रामचन्द्र शुक्ल)

(ग) मञ्जरी सी अँगुलियों में यह कला,
प्रेम पर मैं क्यों न सुध भूलूँ भला ?
क्यों न अब मैं मत्त-गज-सा झूम लूँ ?
कर-कमल लाओ तुम्हारा चूम लूँ।
(मैथिलीशरण गुप्त)

१९. सुमेरु[1]

---

[1] ऊपर १९, १९ मात्राओं के इन दो छन्दों का वर्णन किया गया है—पीयूष-वर्ष तथा सुमेरु। सुमेरु के पादों का प्रथमाक्षर लघु ही होता है परन्तु पीयूषवर्ष में लघु या गुरु कोई भी हो सकता है। सुमेरु के अन्त में दो गुरु क्यों होते हैं और पीयूषवर्ष के अन्त में लघु, गुरु। दोनों की चाल में अन्तर भी स्पष्ट है।

सुमेरु के प्रत्येक पाद में १९ मात्राएँ होती हैं। यति १२,७ अथवा १०, ९ पर होती है। पाद का प्रथम वर्ण लघु होता है और पादान्त में यगण बहुत प्यारा लगता है। जैसे—

(क) नहीं फैला सका, व्यापार कभी तू,
अभी से क्यों चला, गौरव भगी तू।
क्षमा [illegible] गुड़िया, है पुण्य मेरे,
सुखी को हाय! है, दुर्दैव घेरे॥

(सियाराम शरण गुप्त)

(ख) जहाँ अभिषेक-अम्बुद, छा रहे थे,
मयूरों-से सभी मुद, पा रहे थे।
वहीं परिणाम में पत्थर पड़े यों,
खड़े ही रह गये, सब थे खड़े ज्यों॥

(ग) [illegible], देख लीजे, क्या करेगा?
[illegible] [illegible], [illegible], ले देगा!
[illegible] पर हाथ [illegible], सब छोड़ती है,
[illegible] का [illegible], [illegible] [illegible] है॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

१७ हंसगति

हंसगति के प्रत्येक पाद में २० मात्राएँ होती हैं। ११ तथा ९ मात्राओं पर यति होती है। अन्तिम दो वर्ण लघु होते हैं। जैसे—

(क) होते हैं [illegible] [illegible] [illegible]

होता है गुण देख हृदय आनंदित ॥
पर प्रिय लगता नहीं, रूप से दुर्गुण ।
कुरूपता को ढँक, देता है सद्गुण ॥
(रामनरेश त्रिपाठी)

१८ चान्द्रायण

चान्द्रायण के हर चरण में २१ मात्राएं होती हैं। ११ और १० मात्राओं पर यति होती है । इस की ११ वीं मात्रा जगण के अन्त में और १० वीं रगण के अन्त में आती है। जैसे—

(क) शिवे दस जरा सु चन्द्र, अयन कवि कीजिये ।
प्रभु जू दया-निकेत, शरण रस लीजिये ॥
नरवर विष्णु कृपाल, सबहिं सुख दीजिये ।
अपनी दया विचारि, पाप सब छीजिये ॥
(भानु कवि)

(ख) घनदेवी गण आज, कौन सा पर्व है,
जिस पर इतना हर्ष, और यह गर्व है ?
जाता, आता, आज, राम वन आ रहे,
इसी लिए सुख-साज, सजाये जा रहे ।

(ग) यें, ये वल्कल ! दृष्टि कहाँ मेरी रही ?
कौतुक, अब तक देख न पाई वह यही ।

१—जगणान्त ११ और रगणान्त १० कलाओं से चान्द्रायण छन्द रचिए।

२, ३—कहीं कहीं यति-स्थलों पर जगण-रगण का विशेष ध्यान नहीं रखा गया है।

उपर्युक्त ख और ग पद्यों के किसी किसी पाद में यति उचित स्थान पर नहीं पड़ती, परन्तु गति नितान्त निर्दोष है। हम कह ही चुके हैं कि आधुनिक कवि यति के नियम की बहुत अधिक परवा नहीं करते।

२०. बिहारी

बिहारी छन्द के प्रत्येक चरण में २२ मात्राएं होती हैं। यति १४ और ८ मात्राओं पर होती है। जैसे—

(क) भूला न किसी भांति कड़ी टेक टिकाना।
माना मनोज का न कहीं ठीक ठिकाना॥
जीते अमन्द शत्रु रहा, दर्प दिखाता।
शय्या शरों की पाय मरा, धर्म सिखाता॥

(ख) विज्ञान पाठ वेद-पदों, को पढ़ा गया।
विद्या विलास विज्ञवरों, का बढ़ा गया॥
सारे असार पन्थ मतों, को हिला गया।
आनन्द-सुधा सार दया, का पिला गया॥

(ग) इंका उजाड़ काल खलों, को सुझा दिया।
मारे प्रचंड दुष्ट दिया, भी बुझा दिया॥
हनुमान बली वीर-वरों, में प्रधान है।
महिमा अखण्ड ब्रह्मचर्य, की महान है॥
(नाथूराम शंकर)

१—क तथा ख पद्यों का संकेत यथाक्रम भीष्म पितामह स्वामी दयानन्द सरस्वती की ओर है।

हरखि निरखि तुलसिदास, चरणनि रजपाई ॥
(तुलसीदास)

प्रथम पद्य के तृतीय पाद में यति उचित स्थान पर नहीं है।

२२ उपमान (अन्य नाम—दृढ़पद या दृढपद)

उपमान के हर एक पाद में २३ मात्राएं होती हैं। १३ और १० मात्राओं पर यति होती है। प्रत्येक पाद के अन्तिम दो वर्ण गुरु हों तो अच्छा है, नहीं तो अन्तिम वर्ण अवश्य गुरु चाहिए। जैसे—

कभी सुयश पाता नहीं, है अत्याचारी।
निरुद्यमी होता नहीं, सुख का अधिकारी ॥
उसकी मंजिल का नहीं, अन्त कभी होता।
जो अन्धा है एक तो, तिस पर है सोता ॥
(रामनरेश त्रिपाठी)

२३. रोला

रोला के प्रत्येक चरण में चौबीस मात्राएं होती हैं। यति ११ तथा १३ मात्राओं पर होती है। जैसे—

(क) गूँज उठे अलि कूक, उठे कोकिल कुञ्जों में
फूल फूल कर फूल, उठे पादप पुञ्जों में।
सब का यह आनन्द, मधुर सौरभ कर संगी
गन्धवाह वह चला, तुम्हारी ओर उमंगी ॥

(ख) करो नाथ स्वीकार, आज इस हृदय कुसुम को,

आइ भगुल लोग बरणें, युद्ध की सब गाथ ॥
(सरस पिंगल)

(ग) बानर मुख के निलोकत, ही भये दुख दूरि,
सुमलाप नहीं रहे उर, मध्य आनँद पूरि ।
देह पावन ह्व गई पद,-पद्म को पय पाइ ।
पूजने भयी यश पूजित, आशु ही मुनिराइ ॥

(घ) सनिधान भरे तपोवन धाम थी घन धर्म,
अद्य सर्व सर्व भये निरवेद्य वासर-कर्म ।
ईस यद्यपि दृष्टि ही भई, भूरि मंगल सृष्टि
पूँछिने कहँ होति है सो, तथापि वार्क्षविसृष्टि ॥

(ङ) सींचि मंत्र सजीव यौवन, जी उठी तेहि काल ।
पूछियो मुनि कौन की दुहिता यह अद्य बाल ॥
हौं सुता मिथिलेश की, दशरत्थ-पुत्र-कलत्र ।
कौन दीपत जो न जानति, कौन आपुनु अत्र ॥

(च) मुनिपुत्रिके, सुनि मोहिं जानहि, वाल्मीकि द्विजाति ।
सर्वथा मिथिलेश को गुरु, सर्वदा शुभ भाँति ॥
होहिंगे सुत द्वै सुधी पशु, धारिये मर्म ओक ।

१—युद्ध से भागे हुए।
२—आप पे । ३—शीघ्र । ४—तुरन्त । ५—विघ्न-रहित ।
६—बोलना ।
७—लघु पडा जायगा । ८—घर ।

(ग) तुम हो अनन्त अनादि सर्वग सर्वदा, सर्वेश।
अब एक हो, कि अनेक हो, महिमा न जानत शेष॥
भ्रमियो करै, जग लोक चौदह लोम मो,ह समुद्र।
रचना रची, तुम ताहि जानत हो न ब्रह्म न रुद्र॥
(केशवदास)

२७ गीतिका

गीतिका के प्रत्येक पाद में २६ मात्राएं होती हैं। यति १४ और १२ मात्राओं पर होती है और कभी कभी १२, १४ पर भी। अन्तिम दो वर्ण लघु, गुरु होते हैं। इस की ३ री, १०वीं, १७ वीं तथा २४ वीं मात्राएं लघु होनी चाहिए। जैसे—

(क) ब्रह्मचारी ब्रह्मविद्या, का विशारद, विश्राम था।
धर्मधारी धीर योगी, सब-सद्गुण-धाम था॥
कर्म-वीरों में प्रतापी, पर निरा निष्काम था।
श्री दयानन्दर्षि स्वामी, सिद्ध जिस का नाम था॥

(ख) सत्यवादी वीर था जो, वाचनिक संग्राम का।
साहसी पाया किसी को, भी न जिस के काम का॥
प्राण से प्रेमी बना जो, प्रेम के परिणाम का।
क्या दया मानद धारी, धीर था वह नाम का॥

(ग) साधु भक्तों में सुयोगी, संयमी बढ़ने लगे।
सभ्यता की सीढ़ियों पै, सूरमा चढ़ने लगे॥

१—सर्वव्यापक। २—मैं।

निज विश्वास न छीनो हम से, किन्तु किसी भी ठौर।
(सियाराम शरण गुप्त)

(ग) काम क्रोध मद लोभ मोह की, पँचरंगी कर दूर।
एक रंग तन मन वाणी में, भर ले तू भर पूर॥
प्रेम पसार, न भूल भलाई, वैर-विरोध बिसार।
भक्ति-भाव से भज शंकर को, धर्म दया उर धार॥

(घ) देख! कुदृष्टि न पड़ने पावे, पर-वनिता की ओर।
विवश किसी को नहीं सुनाना, कोई वचन कठोर॥
अबलों अबलों को न सताना पाय बड़ा अधिकार।
भक्ति भाव से भज शंकर को, धर्म दया उर धार॥

(ङ) माता पिता सुकवि गुरु राजा कर सब का सम्मान।
रुग्ण अनाथ पतित दीनों को दे जल भोजन दान॥
सुभट गदारि शिल्पकारों को, पूज सुयश विस्तार।
भक्ति भाव से भज शंकर को, धर्म दया उर धार॥
(नाथूराम शंकर)

२९. शुद्धगीता

शुद्धगीता छन्द के हर एक चरण में २७ मात्राएं होती हैं।

१—चैत्र।

२—सरसी और शुद्ध गीता दोनों छन्द २७, २७ मात्राओं के हैं, परन्तु दोनों की यति भिन्न भिन्न है, इस लिए पहचान आसान है।

मृग से दृग हैं किन्तु अनी सी, तीक्ष्ण दृष्टि अनमोली।
यहीं कौन सी बात न उस ने, सूक्ष्म बुद्धि पर तोली।
(घ) काठी-द्वार में तू क्यों कूदा, डाँटा तो हँस बोला—
'तू कहती थी—'और चुराना, तुम मक्खन का गोला।
छीके पर रख छोड़ेंगे सब, अब मिड-भरा मठोला।
निकल उड़ीं वे मिड़ें प्रथम ही, भाग बचा मैं भोला॥"
(मैथिलीशरण गुप्त)

(ङ) है यदि पुत्र स्वर्गप्रद तो फिर, धर्म सार्थक ही है।
जिनके बहुत पुत्र हैं उनके, जीवन सार्थक ही हैं॥
बहु सुत जननी खरी कूकरी, अधम शूकरी नारी।
नखी नागिनी आदि जीव क्या, कभी स्वर्ग अधिकारी।

(च) शुद्र जीव-समुदाय सभी यदि, पुत्रवान होने से।
सहज ऊर्ध्वगति पा सकते हैं, विषय बीज बोने से॥
तो फिर वृथा कर्म-साधन सब, आश्रम धर्म वृथा है।
स्वर्ग लाभ करने की क्या ही, सच्ची सहज प्रथा है।
(वियोगी हरि)

३१ हरिगीतिका

हरिगीतिका के प्रत्येक पाद में २८ मात्राएँ होती हैं। यति

१ सार और हरिगीतिका दोनों २८, २८ मात्राओं के छन्द हैं, और इनकी यति भी समान मात्राओं पर पड़ती है। परन्तु दोनों की चाल में दिन-रात का अन्तर है, इस लिये पहचानने में कुछ कठिनता नहीं पड़ती।

बैठे रहोगे और कब तक, भाग्य को रोते हुए ॥
(मैथिली शरण गुप्त)

(घ) निरुपाधि नारायण निरञ्जन, निर्भयामृत नित्य है ।
भ्रत्ता अनादि अनन्त अनुपम, अग्र जल आदित्य है ॥
परिभू पुरोहित प्राण प्रेरक, प्राज्ञ पूज्य प्रजेश है ।
करतार तारक है तुही यह, वेद का उपदेश है ॥

(छ) कवि काल कालानल कृपा कर, केतु कल्याकन्द है ।
सुखधाम सत्य सुपर्ण सच्चित्, सर्वप्रिय स्वच्छन्द है ।
भगवान भावुक-भक्त-वत्सल, भू विभू भुवनेश है ।
करतार तारक है तुही यह, वेद का उपदेश है ॥
(नाथूराम शङ्कर)

३१. मरहटा

मरहटा छन्द के प्रत्येक भाग में २९ मात्राएं होती हैं। पादान्त में गुरु लघु होते हैं। यति १०, ८, ११ मात्राओं पर होती है। जैसे—

(क) यह सुन गुरु बानी, धनु-गुन तानी, जानी द्विज दुख दानि।
ताड़का सँहारी, दारुण भारी, नारी अति बल जानि ॥
मारीच विडार्यो, जलधि उतार्यो, मार्यो सबल सुबाहु।
देवनि गुन पर्ष्यो, पुष्पनि वर्ष्यो, हर्ष्यो अति सुरनाहु ॥

(ख) एक दिन रघुनायक सीय सहायक, रतिनायक अनुहारि।
शुभ गोदावरि तट विमल पञ्च वट, बैठे हुते मुरारि ॥
छवि देखत ही तन, मदन मथ्यो मन, शूर्पनखा तेहि काल।

सुनि वचन सुजाना, रोदन ठाना, हुइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं, हरिपद पावहिं, ते न परहिं भवकूपा
(तुलसीदास)

३६ ताटंक

ताटंक के प्रत्येक पाद में ३० मात्राएं होती हैं। यति १६ और १४ मात्राओं पर होती है। हर चरण के अन्त में मगण (ऽऽऽ) होता है। जैसे—

(क) वन्दनीय वह देश जहाँ के, देशी निज अभिमानी हों।
बान्धवता में बँधे परस्पर, परता के अज्ञानी हों॥
निन्दनीय वह देश जहाँ के देशी निज-अज्ञानी हों।
सब प्रकार परतंत्र पराये, प्रभुता के अभिमानी हों॥
(श्रीधर पाठक)

(ख) देव तुम्हारे कई उपासक, कई ढंग से आते हैं।
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे, कई रंग के लाते हैं॥
धूम धाम से साज-बाज से, वे मंदिर में आते हैं।
मुक्तामणि बहुमूल्य वस्तुएं, लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं॥

(ग) कानपूर के नाना के मुँह, बोली बहिन छबीली थी।
लक्ष्मीबाई नाम पिता की, वह सन्तान अकेली थी॥
नाना के सँग पढ़ती थी वह, नाना के सँग खेली थी।
बरछी ढाल कृपाण कटारी, उस की यही सहेली थी॥

(घ) इन की गाथा छोड़ चलें हम, झाँसी के मैदानों में।
जहां खड़ी है लक्ष्मीबाई, मर्द बनी मर्दानों में॥

(ख) गुणी जनों के मत्रौषधि से, चटपट उसका विष उतरे।
अपने मन्त्रों से गुणियों का, सर्वनाश यह किंतु करे॥
दोनों के प्रतिकार तीन हैं, विद्वानों ने बतलाए।
मुख-मर्दन या दांत तोड़ना, या हट जाना जब आए॥
(रूपनारायण पाडेय)

(ग) नहीं दान है नहीं दक्षिणा, खाली हाथ चली आई।
पूजा की भी विधि न जानती, फिर भी नाथ चली आई॥
पूजा और पुजापा प्रभुवर, इसी पुजारिन को समझो।
दान-दक्षिणा और निछावर, इसी भिखारिन को समझो॥

(घ) मैं उन्मत्त प्रेम की लोभी, हृदय दिखाने आई हूँ।
जो कुछ भी है यही पास है इसे चढ़ाने आई हूँ॥
चरणों पर अर्पण है इस को चाहो तो स्वीकार करो।
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है, ठुकरा दो या प्यार करो॥
(सुभद्रा कुमारी चौहान)

(ङ) होगा नहीं कहीं भी ऐसा, अति दुरात्मा वह प्राणी।
अपनी प्यारी मातृभूमि है, जिससे नहीं गई जानी।
"मेरी जननी यह भूमि है", इस विचार से जिसका मन।
नहीं उमड़ित हुआ वृथा है, उसका पृथ्वी पर जीवन॥

(च) क्या कोई ऐसा है जिसका मन न हर्ष से भर जाता।
देश विदेश घूम कर जिस दिन, वह अपने घर को आता।
यदि कोइ है ऐसा तो तुम, जाचो उसको भले प्रकार।
नाम न लेता होगा कोई, करता नहिं होगा सत्कार॥

(छ) पावे वह उपाधि यदि उत्तम, अथवा लक्ष्मी का भंडार।

पायजेब बज छननानन मारी टूक टूक भयं छहरानी।
बिछियाँ झनकें झननानन मोरी, हेरत हूँ नहिं दिखरानी॥
(ग) लाजन बरज्यो न कछू तरज्यो, करो कछू ना निगरानी।
जाय कहेंगो नद बबा सों, न्याय चहुक दै है छानी॥
करि सकुचानी दृग मटकानी, जसुदा मा की पहचानी।
बड़ी सयानी अवसर जानी, बोली बानी नय-सानी॥
(ङ) उन तें आप कुँवर कन्हाई लखी मातु कछु घबरानी।
कह्यो मातु ये झूठी सब मुहिँ, पकर लेत बालक जानी॥
माखन मुख बरजोरी मेलत, चूमि कपोलन गहि पानी।
नाच अनेकन मोहि नचावैं, रस मटकन सरसानी॥
(च) भागत हू न पाऊँ छोड़ूँ, बड़ी हठीली गुण मानी।
मुहिँ पहरावत लहँगा लुगरा, पहिरि चीर कोई मरदानी॥
थेइ थेइ थेइ मुहिँ नाच नचावत, नित नेम मन मह ठानी।
मन मोहन की मीठी मीठी, सुनत बात सब मुसकानी॥

(भानु कवि)

३७ रुचिरा

१—ऊपर ३०, ३० मात्राओं वाले इन पाँच छन्दों का वर्णन किया है—चौपैया, ताटङ्क, लावनी, कुकुभ, रुचिर। चौपैया और रुचिरा तो यति-भेद के कारण ही शीघ्र पहचाने जा सकते हैं। ताटङ्क, लावनी और कुकुभ की यति भी समान मात्राओं पर पड़ती है इस लिए इन की पहचान में अधिक सावधान होना पड़ता है। जब चारों पदों के अन्तिम तीनों

गौर वर्ण वृषभानु सुता का, काढ़ो काले तन पर नाप
नाथ उतारो मोर मुकुट को सिर पै सजो साहिबी टोप।

(ग) पौडर चन्दन पोंछ, लपटा आनन की श्री ज्योति जगाय।
अंजन अखियों में मत आँजो, काला ऐनक लेहु लगाय॥
रखधर कानों में लटका लो, कुण्डल काढ़ मेकराफून।
सज पीताम्बर कम्बल काला, डाटो कोट और पतलून॥

(घ) पटक पादुका पहिनो प्यारे, बूट इटाली का लुकदार।
डालो इनर वाच पाकट में, चमके चैन कंचनी चार॥
रख दो गाढ़ गठीली लकुटी, छाता बेंत बगल में मार।
मुरली तोड़ मरोड़ पजामा, बाजै बिगुल सुने संसार॥

(ङ) वैनतेय तज व्योम यान पै, करिए चारों ओर विहार।
फक फक फूँ फूँ फूंको चुरटें, उगलें गाल धुआँ की धार॥
यों उत्तम पदवी फटकारो, माधो, मिस्टर नाम धराय।
पीटो पटक नई प्रभुता के, भारत जाति भक्त हो जाय॥
(नाथूराम शङ्कर),

(च) बादशाह गरजा- 'ओ काफिर, सोच-समझ कर तू मुँह खोल
मुसल्मान हो जा, या अब क्या तुझ को भी मरना है बोल"?
' करो मुसलमानी उन को जो, बेचार बचे अनजान।
चाहे मेरा गला काट लो, मैं सदैव हिंदू-सन्तान॥"

(छ) ' गला नहीं, सिर पर मारा रख, डालो इसे इसी दम चीर।"
दांत पीसने लगा क्रोध से, आज्ञा देकर आलमगीर॥
चिरता रहा ठूँठ सा द्विजवर, प्रणव नाद का निश्चल ठाठ।

(क) मुनि साप जो दीन्हा, अति भल कीन्हा,
परम अनुग्रह, मैं माना।
देखिउँ भरि लोचन, हरि भवमोचन,
इहै लाभ स,कर जाना॥
विनती प्रभु मोरी, मैं मति भोरी,
नाथ न माँगौं, वर आना।
पदकमल परागा, रस अनुरागा,
मम मन-मधुप क,रै पाना॥
(तुलसीदास)

(ख) करि बदन निमंडित, ओज अखंडित,
पूरण पंडित ज्ञानपर।
गिरिनन्दिनि नंदन, असुर निकंदन,
सुर उर चंदन, कीर्तिकर॥
भूषण मृग लक्षण, धीर विचक्षण,
जन प्रण रक्षण पाशधर।
जय जय गणनायक, दलगणघायक,
दास सहायक, विघ्नहर॥
(दास)

(ग) परसत पद पावन, शोक नशावन,
प्रकट भई, तप पुंज सही।
देखत रघुनायक, जन सुखदायक,
सम्मुख ह्वै कर, जोरि रही॥

१—लघुवत् पढ़ा जायगा।

सोहैं सिंहासन, प्रभा प्रकाशन,
　　कर्मविनाशन, दुखनाशन ॥
सुग्रीव विभीषण, सुजन बधुजन,
　　सहित तपोधन, भूपति गन ।
आये सँग मुनि जन, सकल देवगण
　　मृग तप कानन चतुरानन ॥
　　　　　　　　(केशवदास)

४०. समान सवैया

समान सवैया के प्रत्येक पाद में ३२ मात्राएं होती हैं। यति १६, १६ मात्राओं पर होती है और पादान्त में भगण (ऽ।।) होता है। जैसे—

सोरह सोरह मत्त धरौ जू, छंद समान सवैया सोभत ।
श्री रघुनाथ चरण नहिं सेवत, फिरत कहा तू इत उत जोहत ॥
जब लगि शरणागत न प्रभु को, तब लगि भव-बाधा तुहि बाधत ।
पापपुंज हों छार छनक में, शुभ श्री राम नाम आराधत ॥
　　　　　　　　(भानु कवि)

४१ दंडकला

दंडकला के प्रत्येक पाद में ३२ मात्राएं होती हैं । यति

१—ऊपर ३२, ३२ मात्राओं के तीन छन्दों (त्रिभंगी, समान सवैया और दंडकला) का वर्णन किया गया है । तीनों की यति और पादान्त के वर्ण भिन्न भिन्न हैं, इसलिए इन की पहचान में कोई कठिनता नहीं पड़ती ।

के उदाहरणों में इन के लक्षणों को समन्वित करके दिखाओ।

३ तोमर उल्लाला और सखी छन्दों में क्या भेद है ? उत्तर स्पष्ट और संक्षिप्त होना चाहिए।

४ आप ने १४, १४ मात्राओं के जो छन्द पढ़े हैं, उन का परस्पर भेद स्पष्टतया उदाहरण सहित दिखाओ।

५ सखी, हाकलि और मधुमालती छन्द, छन्दों के कौन से प्रकार के अन्तर्गत हैं और क्यों ? इन का अन्तर स्पष्टतया प्रकट करो।

६ चाँदोला, चौपाई और गुपाल—इन छन्दों के लक्षण और उदाहरण लिखो।

७ १५, १५ मात्राओं के छन्द कौन कौन से हैं ? उन का पारस्परिक भेद एक एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।

८ चौपाई, चौबोला और चौपैया छन्दों का स्वरूप, परस्पर भेद और उदाहरण विशद रीति से लिखो।

९ पादाकुलक और चौपाई की चाल तथा मात्रा-संख्या समान हैं। फिर इन दोनों में भेद क्या है ? उदाहरणों द्वारा उत्तर की पुष्टि करो।

१० पद्धरि और शृंगार छन्दों में क्या भेद है ? उत्तर सोदाहरण दो।

११ १६, १६ मात्राओं के छन्दों के नाम तथा लक्षण मात्र लिखो

१२ पीयूषवर्ष, आनन्दवर्धक और सुमेरु छन्दों के लक्षण और उदाहरण देकर इनके पारस्परिक भेद को स्पष्ट दिखाओ।

यह स्वतंत्रता की चिनगारी, अन्तरतम से आई थी।

११ तू गरीब को निवाज, हौं गरीब तेरो।
धारक कहिए कृपाल, तुलसीदास मेरो॥

१२. लोचन अभिरामा, तन घनश्यामा, निज आयुध भुजचारी।
भूषन वनमाला, नयन विशाला, शोभा सिंधु खरारी॥

१३. अवहुँ सुमिर हरि नाम शुभ, काल जात बीता।
हाथ जोर विनती करौं, नाहिं जात रीता॥

१४ कृष्णा सुभद्रा आदि को बन,शोक कर रोते हुए।
हरि के हृदय में भी वहाँ कुछ, कुछ करुणरस-कण हुए॥

१५ विद्या का भरपूर, इढ़ अभ्यास किया था।
पर औरों की भाँति, न कोई पास किया था॥

१६ उसे व्यापती है तो केवल, यही एक भय-बाधा।
"कह दूँगी, खेलेगी तेरे, सग न मेरी राधा"॥

१७ गभीर मौन ऊँची, वे शैल-श्रेणियाँ क्यों।
चिर काल से खड़ी हैं?, किसकी उन्हें प्रतीक्षा॥

१८ पाय के नर-देह प्यारे, व्यर्थ माया में न भूल।
हो रहो शरणे हरी के, तौ मिटे भव जन्म शूल॥

१९. देह पावन है गई पद-पद्म को पय पाइ।
पूजतै भयौ वश पूजित, आशु ही मुनिराय॥

२० निर्दय बन कर करो और भी, जो करना हो और।
निज विश्वास न छीनो हम से, किन्तु किसी भी ठौर॥

२१ अन्ध अज्ञानी अँधेरे, में पड़े मर जायँगे।
आप डूबेंगे अविद्या, देश में भर जायँगे॥

निसि मलीन यह निसि दिन, यह विगसाय।

(घ) चंपक हरवा अँग मिलि, अधिक सुहाइ।
जानि परै सिय हियरे, जब कुम्हिलाइ॥

(ङ) सिय तुव अंग रंग मिलि, अधिक उदोत।
हार बेलि[1] पहिरावौं चंपक होत॥

(च) गरब करहु रघुनंदन, जनि मन माँह।
देखहु आपनि मूरति, सिय कै छाँह॥

(छ) स्याम गौर दोउ मूरति, लछिमन राम।
इन ते भइ सित कीरति, अति अभिराम॥

(ज) बिरह आगि उर ऊपर, जब अधिकाय।
ए अँखियाँ दोउ बैरिनि, देहिं बताय॥

(झ) अब जीवन कै है कपि, आस न कोइ।
कनगुरिया[3] कै मुँदरी, कंकन होइ॥

(ञ) चहि गनती महँ गनती, जस बन घास।
राम जपत भये तुलसी, तुलसीदास॥

(बरवै रामायण)

(ठ) पीतम मिले सपनवाँ, भो सुख खानि।
आनि जगायेसि चेरिया, भइ दुखदानि॥

(ड) विरहिन और विदेसिया भौ इक ठौर।

१—हार। २—एक सफेद फूल। ३—सब से छोटी अँगुली।
४—इन छन्दों में कहीं कहीं गुरु वर्णों को लघुवत पढ़ना पड़ेगा, तब ही छन्दों की गति ठीक होगी।

(घ) देखो करनी कमल की, कीनों जल सों हेत।
प्राण तज्यो प्रेम न तज्यो, सूख्यो सरहि समेत॥
(सूरदास)

(ङ) जो विषया संतन तजी, मूढ़ ताहि लिपटात।
ज्यों नर डारत वमन कर, श्वान स्वाद सों खात॥

(च) कमला थिर न रहीम कहि, यह जानत सब कोय।
पुरुष पुरातन की बधू क्यों न चंचला होय॥

(छ) 'रहिमन' अँसुवा नयन ढरि, जिय दुख प्रकट करेय।
जाहि निकारो गेह तें, कस न भेद कहि देय॥
(रहीम)

(ज) सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल।
यह बानिक मो मन बसौ, सदा बिहारी लाल॥

(झ) भूषन भार सँभारि है, किमि यह तन सुकुमार।
सूधे पाय न परत धर, सोभा ही के भार॥

(ञ) कब को टेरत दीन ह्वै, होत न स्याम सहाय।
तुमहू लागी जगत-गुरु, जग नायक जग-बाय॥
(बिहारी)

(ट) मुह मांगे, रण सूरमा, देत दान पर हेतु।
सीस दान हू देत पै, पीठ दान नहीं देतु॥

(ठ) पर-भाषा पर भाव, पर-भूषण पर परिधान।
पराधीन जन की अहै, यह पूरी पहचान॥
(वियोगी हरि)

(ड) सहज शत्रु हैं मनुज के, चिर-निद्रा तन-रोग।

(ग) मङ्गल-मूल महेश, दूर अमङ्गल को करे।
　　ग्रह विवेक दिनेश मोह महातम को हरे॥
　　　　　　　　　　(नाथूराम शङ्कर)

(घ) फूलै फलइ न बेत, यदपि सुधा बरसहिं जलद।
　　मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं विरंचि सम॥

(ङ) जल पय सरिस बिकाय, देखहु प्रीति कि रीति भल।
　　बिलग होइ रस जाइ, कपट खटाई परत ही॥

(च) सो नर क्यों दसकंध, बालि बधेउ जेहि एक सर।
　　बीसहु लोचन अंध, धिग तव जनम कुजाति जड़॥

(छ) तव सोनित की प्यास तृषित राम-सायक-निकर।
　　तजौं तोहि तेहि त्रास, कटु जल्पक निसिचर अधम॥
　　　　　　　　　　(तुलसीदास)

५. उल्लाल

उल्लाल छन्द के चारों चरणों में कुल ५६ मात्राएँ होती हैं। विषम चरणों में १५, १५ और सम चरणों में १३, १३। जैसे—

(क) कुछ मिथ्या से होता नहीं, आँख उघार निहार लो।
　　सुख चाहो तो सद्भाव से शङ्कर को उर धार लो॥

(ख) गरिमा न गही गोपाल की, ज्ञान न गुणियों से लिया।
　　शठ शङ्कर लोभी लालची, पाय प्रचुर पूँजी जिया॥

१, २—इन वर्णों को लघुवत् पढ़ना पड़ेगा, तभी छन्द की चाल ठीक रहेगी।

६. रुचिरा द्वितीय

इसके चारों चरणों में कुल ६० मात्राएं होती हैं । विषम चरणों में १६, १६ और सम में १४, १४ । अन्तिम दो वर्ण गुरु होते हैं । यह छन्द, मात्रिक सम छन्द कुकुभ का आधा है । जैसे—

(क) हे भूतेश महाबलधारी, तू सब संकट-हारी है।
तेरी मंगल-मूल-दया का, जीव यूथ अधिकारी है॥
(ख) धर्म-धार जो प्राणी तुम से, पूरी लगन लगाता है।
विद्या, बल देता है उसको, भ्रम का भूत भगाता है॥
(ग) हे सुनिश्चकर्मा शिव स्रष्टा, तू कब खाली रहता है।
निर्विराम तेरी रचना का, स्रोत सदा से बहता है॥
(घ) जो आलस्य बिसार विवेकी, तेरे घाट उतरता है।
उस उद्योग दीप के द्वारा, सारा देश सुधरता है॥
(नाथू राम शंकर)

(ङ) प्रतिध्वनि! प्रतिध्वनि! क्यों रोती है? जले हृदय को रोने दे।
आँसू की धारा से उसको, सारा विश्व भिगोने दे॥
(च) सुख मिलता है व्यथित हृदय को, अपनी व्यथा सुनाने में।
स्वयं तड़पने में सुनने वालों को भी तड़पाने में॥
(भगवती चरण वर्मा)

महिमा अपनी आप, समझाते थे सब कहीं

(ग) चौंके विरंचि शंकर सहित, कोल कमठ अहि कलमल्यौ।
ब्रह्माण्डखण्ड कियो चण्ड धुनि, जबहिं राम सिवधनु दल्यौ॥

(घ) नाम भरोस नाम बल, नाम सनेहु।
जनम जनम रघुनन्दन, तुलसिहिं देहु॥

(ङ) जिस गुण-हीन ज्ञान सागर ने। सब गुणधारी धारे हैं।
उस के परम भक्त युग-योगी। श्री गुरुदेव हमारे हैं॥

(क) साईं सब संसार में, मतलब का व्यवहार।
जब लग पैसा गाँठ में, तब लग ताको यार॥
तब लग ताको यार, यार सँग ही सँग डोलै।
पैसा रहा न पास, यार मुख से नहिं बोलै॥
कह गिरिधर कविराय, जगत यहि लेखा भाई।
करत बेगरजी प्रीति, यार बिरला कोई साईं॥

(ख) साईं अवसर के पड़े, कौन सहे दुख द्वन्द्व।
जाय बिकाने डोम घर, वै राजा हरिचन्द॥
वै राजा हरिचन्द, करैं मरघट रखवारी।
धरे तपस्वी वेष, फिरै अर्जुन बलधारी॥
कह गिरिधर कविराय, तपै वह भीम रसोई।
को न करै घटि काम, परे अवसर के साईं॥

(ग) बिना विचारे जो करै, सो पाछे पछिताय।
काम बिगारे आपनो, जग में होत हँसाय॥
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न पावै।
खान पान सन्मान, राग रंग मनहिं न भावै॥
कह गिरिधर कविराय, दुख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय माहिं, कियो जो बिना विचारे॥

(घ) रहिए लटपट काटि दिन, बरु घामें मा सोय।
छाँह न वाकी बैठिए, जो तरु पतरो होय॥
जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा दैहै।
जा दिन बहै बयारि, टूटि तब जर से जैहै॥
कह गिरिधर कविराय, छाँह मोटे की गहिये।

मानो तपसी तप करे, मल कर भस्म शरीर ॥
मल कर भस्म शरीर, तीर जब देखी मछली।
वहै 'मीर' भ्रमि चोंच,समूची फौरन निगली॥
फिर भी आय शरण, धरे जो तज के अगला।
उन के भी तू प्राण हरे, रे छी! छी! बगला॥
(अमीर अली मीर)

छप्पय (अन्य नाम षटपदी)

छप्पय में छ पाद होते हैं। ऊपर चार पाद रोला के और नीचे दो पाद उल्लाला या उल्लाल के। इस लिए कहीं पर छप्पय में कुल १४८ मात्राएं होती हैं और कहीं पर १५२। जैसे—

(क) कोई पीड़ा हुई, जरा सी भी जब मुझ को।
मुझ से दूना दुःख, हाय! व्यापा तब तुझ को॥
रात रात भर तुझे, दृगों में नींद न आई।
जिस प्रकार हो सका,शीघ्र वह व्यथा मिटाई॥
मेरे सुख में सुख था तुझे, दुख में दुख रहा सदा।
मुझ से सर्वत्र अभिन्न था, तेरा तन मन सर्वदा॥

(ख) काटा मैंने नई उठी दन्तुली से तुझ को।
किया और भी अधिक प्यार तब तू ने मुझ को॥
छींट दिया जल शीत-काल में तेरे ऊपर।
तब भी तू ने प्रेम किया मा मेरे ऊपर॥
जब इन बातों की याद ही, मुझ को आजाती कभी।

लोट लोट कर वहीं हृदय को शान्त करेंगे।
उस में मिलते समय, मृत्यु से नहीं डरेंगे॥
उस मातृ-भूमि की धूल में, जब पूरे सन जायँगे।
हो कर भव-बंधन-मुक्त हम, आत्मरूप बन जायँगे॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

(छ) *काश हम न और दूस पीटा भर भर कर।
पेल पेल कर तेल निकाला तुझ से जी भर॥
फिर दीपक में भर कर थोड़ा तूल मिलाया।
निर्दयता से गोद खोद कर तुम्हें जलाया॥
हम ने तो अस्तित्व तक नष्ट तुम्हारा कर दिया।
तुमने अहा! प्रकाशसे, अखिल भुवनको भरदिया॥

(मोहनलाल महतो)

(ज) जिहि मुच्छन धरि हाथ, कछू जग सुजस न लीनो।
जिहि मुच्छन धरि हाथ, कछू परकाज न कीनो॥
जिहि मुच्छन धरि हाथ, कछू पर-पीर न जानी।
जिहि मुच्छन धरि हाथ, दीन लखि दया न आनी॥
मुच्छ नाहिँ वे पुच्छ सम, कवि 'भरमी' उर आनिये।
वचन-लाज नहिँ दान गति, तिहि मुख मुच्छ न मानिये॥

---

* छ और ज पद्यों में चक्षाला ५२, ५२ मात्राओं का है शेष सब में ५६, ५६ का।

१—मलमल कर। २—सरसों की ओर संकेत है।

लोट लोट कर वहीं हृदय को शान्त करेंगे।
उस में मिलते समय, मृत्यु से नहीं डरेंगे॥
उस मातृ भूमि की धूल में, जब पूरे सन जायँगे।
हो कर सब बंधन-मुक्त हम, आत्मरूप बन जायँगे॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

(छ) *काटा हम ने और खूब पीड़ा भर भर कर।
पेल पेल कर तेल निकाला तुझ से जी भर॥
फिर दीपक में भर कर थोड़ा तूल सिलाया।
निर्दयता से खोद खोद कर तुम्हें जलाया॥
हम ने तो अस्तित्व तक नष्ट तुम्हारा कर दिया।
तुमने अहा! प्रकाशसे,अखिल भुवनको भरदिया॥

(मोहनलाल महतो)

(ज) जिहि मुच्छन धरि हाथ, कछू जग सुजस न लीनो।
जिहि मुच्छन धरि हाथ, कछू परकाज न कीनो॥
जिहि मुच्छन धरि हाथ, कछू पर-पीर न जानी।
जिहि मुच्छन धरि हाथ, दीन लखि दया न आनी॥
मुच्छ नाहिं वे पुच्छ सम, कवि 'भरमी' उर आनिये।
बचन-लाज नहिं दान गति, तिहि मुख मुच्छ न मानिये॥

---

* [illegible] और ज पद्यों में उल्लाला ५२, ५२ मात्राओं का है, शेष सब में ५६, ५६ का।

१—मलमल कर। २—सरसों की ओर संकेत है।

उन्हें ही उन छन्दों का मिलिन्दपाद कह देते हैं । पूर्वकाल में यह चाल न थी। सम छन्द चार चार चरणों के ही हुआ करते थे। परन्तु काल के साथ साथ कवियों के अन्तःकरण में भी परिवर्तन होता रहता है। इसी लिए शंकर आदि कवियों ने छ छः पादों के छन्दों की रचना की है। जैसे, गीतिका मात्रिक सम छन्द है। गीतिका के नीचे गीतिका के दो पाद और रख दिए तो वह गीतिकात्मक मिलिन्दपाद कहा जायगा। इसका उदाहरण देखिए।

गीतिकात्मक मिलिन्दपाद

(क) तर्क झंझा के झकोले, झाड़ते चलने लगे ।
युक्तियों की आग चेती, जालिया जलने लगे ॥
पुण्य के पौधे फबीले फूलने फलने लगे ।
हाथ हत्यारे हठीले, मादकी मलने लगे ॥
खेल देखे चेतना के, जड़ खिलोना खो गया ।
देख लो लोगो दुबारा, भारतोदय होगया ॥

(ख) तामसी थोथे मतों की, मोह माया हट गई ।
पेट की पोली, पहाड़ी खण्डनों से फट गई ॥
छूत छैया की अछूती, नाक लम्बी कट गई ।
लालची पाखण्डियों की, पेट पूजा घट गई ॥
ऊत भूतों का बखेड़ा, डूब मरने को गया ।
देख लो लोगो दुबारा, भारतोदय हो गया ॥

(नाथूराम शंकर)

उन्हें ही उन छन्दों का मिलिन्दपाद कह देते हैं। पूर्वकाल में यह चाल न थी। सम छन्द चार चार चरणों के ही हुआ करते थे। परन्तु काल के साथ साथ कवियों के अन्तःकरण में भी परिवर्तन होता रहता है। इसी लिए शंकर आदि कवियों ने छः छः पादों के छन्दों की रचना की है। जैसे, गीतिका मात्रिक सम छन्द है। गीतिका के नीचे गीतिका के दो पाद और रख दिए तो वह गीतिकात्मक मिलिन्दपाद कहा जायगा। इसका उदाहरण देखिए।

गीतिकात्मक मिलिन्दपाद

(क) तर्क झंझा के झकोले, झाड़ते चलने लगे।
युक्तियों की आग चेती, जालिया जलने लगे॥
पुण्य के पौधे फबीले फूलने फलने लगे।
हाथ हत्यारे हठीले, मावकी मलने लगे॥
खेल देंगे चेतना के, जड़ खिलौना खो गया।
देख लो लोगो दुवारा, भारतोदय होगया॥

(ख) तामसी थोथे मतों की, मोह माया हट गई।
पेंठ की पोली पहाड़ी, खण्डनों से फट गई॥
छूत छैया की अछूती, नाक लम्बी कट गई।
लालची पाखण्डियों की, पेट पूजा घट गई॥
ऊत भूतों का बखेड़ा, डूब मरने को गया।
देख लो लोगो दुबारा, भारतोदय हो गया॥

(नाथूराम शंकर)

पंचम अध्याय

मात्रिक दण्डक

जिन मात्रिक सम छन्दों के प्रत्येक चरण में मात्रा संख्या ३२ से अधिक हो, उन्हें मात्रिक दण्डक कहते हैं। इन के पाद इतने लम्बे होते हैं कि बीच में सांस लेने के लिए अवश्य रुकना पड़ता है। यही दण्ड है और इसी से ये दण्डक कहे जाते हैं।

१. द्वितीय झूलना

द्वितीय झूलना प्रत्येक पाद में ३७ मात्राएं होती हैं। यति १०, १०, १०, ७ मात्राओं पर होती है। पादान्त में यगण (। ऽ ऽ) होता है। जैसे—

१ कनक गिरि-शृंग चढ़ि, देखि मरकट-कटक,
　　　　　　　　　　बदत मन्दोदरी, परम भीता।
सहसभुज मत्त-गजराज-रन केसरी,
　　　　　　　　　　परसुधर-गर्ब जेहि, देखि बीता॥
'दास तुलसी' समर, सूर कोसलधनी,
　　　　　　　　　　ख्याल ही बालि बल सालि जीता॥

१—वानरों की छावनी। २—परशुराम। ३—सहज ही।

ज्ञानगौरत्व-सी सिद्धिविस्तार-सी ॥
कुन्द-सी कास-सी, भारती-वास-सी,
सुरतरु निहार सी, सुधारस-सार-सी।
गङ्गजल धार-सी, रजत के तार-सी,
कीर्ति तव विजय की शम्भु आगार-सी ॥

(छन्दोऽर्णव)

अभ्यासार्थ प्रश्न

१ मात्रिक विषम छन्द किस कहते हैं ? उसका मात्रिक सम और मात्रिक अर्ध-सम छन्दों मे क्या भेद होता है ?

२. मात्रिक सम, अर्धसम और विषम छन्दों का एक एक उदाहरण देकर उनके अन्तर को स्पष्टतया लिखो।

३ कुण्डलिया और छप्पय को विषम छन्दों मे क्यों गिनते हैं ? दोनों का एक एक उदाहरण देकर सिद्ध करो कि वे विषम छन्द हैं।

४ मिलिन्दपाद छन्द कौन सा होता है ? उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।

५. क्या आर्या छन्द को मात्रिक अर्धसम छन्दों में नहीं गिन सकते ? उत्तर युक्ति-युक्त होना चाहिए।

६ दण्डक छन्द किसे और क्यों कहते हैं ? मात्रिक साधारण और मात्रिक दण्डक में क्या भेद है ?

७ किसी मात्रिक दण्डक छन्द का नाम, लक्षण और उदाहरण लिखो।

५ उक्त तीनों छन्द कितनी कितनी मात्राओं के हैं ? उदाहरण देकर इनके भेद को स्पष्टता-पूर्वक लिखो।

६ उल्लाला और रूप माला तथा गुपाल और दिक्पाल छन्दों के लक्षण, उदाहरण और पारस्परिक भेद स्पष्ट दर्शाओ।

७ गीतिका, हरिगीतिका और शुद्ध गीता छन्दों के पारस्परिक अन्तर को विशदतया दिखाओ।

८ २७, २७ मात्राओं के जो छन्द आपने पढ़े हैं, उन का स्वरूप और उदाहरण लिखो।

९ सार और हरिगीतिका छन्दों में क्या भेद है ? एक एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।

१० ताटक, लावनी और कुकुभ छन्दों में क्या भेद है ? उदाहरण देकर आशय को स्पष्ट करो।

११ चौपैया और रुचिरा छन्दों के भेद को सम्यक् स्पष्ट करो।

१२ आप ने ३०, ३० मात्राओं के जो छन्द पढ़े हैं उन के नाम और लक्षण लिखो।

१३ मात्रिक सवैया और समान सवैया छन्दों के अन्तर को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट दिखाओ।

१४ त्रिभङ्गी, समान सवैया और दण्डकला छन्दों का स्वरूप उदाहरण और पारस्परिक भेद स्पष्ट करो।

१५. झूलना प्रथम तथा झूलना द्वितीय के भेद को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करो।

विष वास्या बन्धु प्रिय जेहि ।
कहिय रमा-सम किमि वैदेही ॥

८　शरण आओ प्रभू, करहिं दाया ।
तोर घरैं सौं, जाल माया ॥

९.　इसी क्षण भूप न कुछ शान्ति पाईं ।
बिना न पुत्र की दृढ़ भक्ति पाई ॥
यहा पर बाहु तव ये छटपटाये ।
उठे पर पैर उन के लटपटाये ॥

१०　तुम हुस्न प्रभा की, बाकी ले फिर,
विधि ने यह फरफन्द किया ।
चम्पकदल सोनजुही नरगिस
चामीकर चपला चन्द किया ॥

११　जगत ईस नर भूप, लिया ढिग सोहत ।
गल बैजन्ती माल, सुजन मन मोहत ॥

१२.　जब लगि शरणागत न प्रभु की,
तब लगि भव बाधा तुहि बाधत ।
पाप पुञ्ज हों छार छनक में,
शुभ श्री राम नाम आराधत ॥

१३　कहिए, ये किस लिए, आज पहने गये ?
कहाँ राज-परिधान, और गहने गये ?

१४　विनती प्रभु मोरी, मैं मति भोरी,
नाथ न मागौं, वर आना ।

षष्ठ अध्याय



वर्ण-सम-वृत्त (साधारण)

जिन छन्दों के चारों पादों में वर्ण-संख्या और वर्ण क्रम समान होते हैं, उन्हें वर्ण-सम-वृत्त कहते हैं। नीचे प्रमुख वर्ण सम वृत्तों का उल्लेख किया जाता है।

१, मल्लिका (र ज, ग ल)

(अन्यनाम—समानी)

मल्लिका वृत्त के प्रत्येक चरण में रगण, जगण, गुरु और लघु के क्रम से आठ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) वानरेश यूथ नाथ। लंकनाथ-बन्धु साथ॥
सोभिजै भले समीप। देस देस के महीप॥
(केशवदास)

(ख) खम्भ तें प्रगट्ट होय। दैत्य को सु-अङ्क गोय॥
मार के नृसिंह ताहि। पालिहै सुभक्त चाहि॥
(गदाधर भट्ट)

प्रेम नहीं तो, आदर क्या है ?
प्यास नहीं तो, सागर क्या है ?

(रामनरेश त्रिपाठी)

भूमि सगी ना, मान वृथा ही।
कृष्ण सगा है, या जग माहीं॥
ताहि रिझैय, ज्यों व्रजबाला।
डारि गरे में, चम्पकमाला॥

(भानु कवि)

८. सारवती (भ भ भ, ग)

सारवती वृत्त के चारों चरणों में तीन तीन भगण और एक एक गुरु के क्रम से १०, १० वर्ण होते हैं। जैसे—

देखि तबै भृगुनन्दन को।
छत्रिन के कुल कन्दन को॥
बोलि उठे, द्विज हौं न डरौं।
आयुध ले अब युद्ध करौं॥

(गदाधर भट्ट)

९. शालिनी (म त त, ग ग) ४, ७

शालिनी वृत्त के प्रत्येक पाद में मगण, दो तगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं। यति चौथे और सातवें वर्ण के बाद होती है। जैसे—

लक्ष्मी दीजै, लोक में मान दीजै।
विद्या दीजै, सभ्य सा ज्ञान दीजै॥

द्विजाभास कोरे पढ़ाना नहीं ॥
(घ) करो प्यार पूरा सदाचार पै।
दुराचार से जी लगाना नहीं ॥
निरालस्य विद्या पढ़ाते रहो।
अविद्या नटी को नचाना नहीं ॥
(ङ) चलाना सदुद्योग से जीविका।
दिखा लोभ लीला कमाना नहीं ॥
न चूको मिलो शङ्करानन्द से।
गिरे सर्फ के गीत गाना नहीं ॥

(नाथूराम शङ्कर)

७ रथोद्धता (र न र, ल ग)

रथोद्धता वृत्त के प्रत्येक पाद में रगण, नगण, रगण और लघु, गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं। जैसे—

बात तोल कर सर्वदा कहो।
सावधान छल से सदा रहो ॥
अंत सोच सब बार में बहो।
हानि ग्लानि सब धैर्य से सहो ॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

८. स्वागता (र न भ, ग ग)

स्वागता वृत्त के हर एक चरण में रगण, नगण, भगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं। जैसे—

(च) मन्द मन्द धुनि सों घन गाजैं ।
तूर तार जनु आवन बाजैं ॥
ठौर ठौर चपला चमकै यों ।
इन्द्र लोक तिय नाचति है ज्यों ॥
(केशवदास)

९ इन्द्रवज्रा (त त ज, ग ग)

इन्द्रवज्रा वृत्त के प्रत्येक पाद में दो तगण, जगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) सीता सु ले राघव औध आये।
आनन्द सों मङ्गल गीत गाये ॥
शोभा भरैं देखन चारु नारी ।
ठाढ़ी करैं पुष्प सुवृष्टि भारी ॥
(गदाधर भट्ट)

(ख) संसार है एक अरण्य भारी ।
हुए जहाँ हैं हम मार्गचारी ॥
जो धर्म रूपी न कुठार होगा ।
तो कौन निष्कण्टक पार होगा ॥
(मैथिलीशरण गुप्त)

(ग) मैं जो नया ग्रन्थ विलोकता हूं।
भाता मुझे सो नव मित्र सा है॥
देखूँ उसे मैं नित बार बार ।
मानो मिला मित्र मुझे पुराना ॥
(गिरधर शर्मा)

(क) बड़ा कि छोटा कुछ काम कीजे।
परन्तु पूर्वापर सोच लीजे॥
बिना विचारे यदि काम होगा।
कभी न अच्छा परिणाम होगा॥
(मैथिली शरण गुप्त)

(ख) अनेक ब्रह्मादि न अन्त पायो।
अनेकधा वेदन गीत गायो॥
तिन्हें न रामानुज बन्धु जानौ।
सुनो सुधी केवल ब्रह्म मानौ॥
(केशव दास)

(ग) अनन्तकल्याणि, सुधास्वरूपे।
सजीवता हो भर लेखनी में॥
विशुद्ध वीणा लय माधुरी से।
बनूं कृपा-पात्र मनस्वियों का।
(श्यामाकान्त पाठक)

(घ) निजेच्छया भूतल देहधारी।
अधर्म-संहारक धर्मचारी॥
चले दशग्रीवहिँ मारिबे को।
तपी व्रती केवल पारिबे को॥

(ङ) चले यती पावन पादुका लै।
प्रदक्षिणा राम-सियाहु को दै॥
गये तॅ नदीपुर वास कीनों।

१—इस का उच्चारण लघुवत् होगा।

उपर्युक्त पद्य के आदिम अन्तिम चरण उपेन्द्रवज्रा के हैं और मध्यम दोनों इन्द्रवज्रा के।

(ख) "उद्यान तजा पुस्तक-प्रेम आप।
देता अभी हूं यह राज्य सारा॥"
कहे सुने यों यदि चक्रवर्ती।
"ऐसा न राजन् कहिए", कहूं मैं॥
(गिरिधर शर्मा)

इस पद्य का तृतीय चरण उपेन्द्रवज्रा का है, शेष सब इन्द्रवज्रा के। प्रथम पाद का अन्तिम वर्ण पादान्त में होने के कारण ही गुरु माना गया है।

(ग) अखण्ड भण्डार भरा हुआ है।
सुवर्ण का जो मम गेह में ही॥
बताइए हे मम मित्र-वर्य।
क्यों लूं किसी के फिर दान को मैं॥
(गिरिधर शर्मा)

इस पद्य का चतुर्थ चरण इन्द्रवज्रा का है, शेष सब उपेन्द्रवज्रा के।

(घ) मिले हुए सज्जन वृन्द का तो।
कभी कभी मैं करता सुसंग॥
परन्तु है पुस्तक मित्र ऐसा।
होता कभी जो मुझ से न न्यारा॥

उक्त पद्य के पहले तीन चरण उपेन्द्रवज्रा के हैं और चौथा इन्द्रवज्रा का।

पै कमला विमला पति कोऊ ॥
(घ) सुंदर श्यामल राम सु जानौ ।
गौर सु लक्ष्मण नाम बखानौ ॥
आशिष देहु इन्हैं सब कोऊ ।
सूरज के कुल-मंडन दोऊ ॥
(ङ) हौं भृगुनंद बली जग माहीं ।
राम विदा करिये घर जाहीं ॥
हौं तुम से फिरि युद्ध हिमाडौं ।
क्षत्रिय वंश को बैर लै छाडौं ॥
(च) राज-सभा न विलोकिय कोऊ ।
शोक गहे तब सोदर दोऊ ॥
मंदिर मातु विलोकि अकेली ।
ज्यों बिन वृक्ष विराजति बेली ॥
(छ) मातु सबै मिलिबे कहँ आई ।
ज्यों सुत को सुरभी सुलवाई ॥
लक्ष्मण स्यो उठि कै रघुराई ।
पायन जाय परे दोउ भाई ॥
(ज) मातनि कंठ उठाय लगाये ।
प्राण मनो मृत देहनि पाये ॥
आइ मिलीं तब सीय सभागी ।
देवर सासुन के पग लागी ॥
(केशवदास)

१—२, ३ इन वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा ।

धिक ! वृथा हुई, ऊर्मिला व्यथा ॥

(घ) समय है अभी, हा ? फिरो फिरो,
तुम न यों यश, स्वर्ग से गिरो।
प्रभु दयालु हैं लौट के मिलो,
न उनके छुटे द्वार से हिलो।

(ङ) तुम सिलो मुझे, धर्म छोड के,
फिर मरूं न क्यों, मुण्ड फोड के ?
यह शरीर लो, प्राण ये बुझे,
धर न हा सखी, छोड दे मुझे ॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

१४. भुजगप्रयात (य य य य)

भुजङ्ग प्रयात वृत्त के प्रत्येक पाद में चार यगण (ISS) के क्रम से १२ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) जहां कञ्ज के कुञ्ज की मञ्जुता थी,
लता पत्रिका पुष्पिता गुञ्जिता थी।
जहां थे हरे कुञ्ज के पुञ्ज प्यारे,
जहां कञ्ज थे भृङ्ग की गुञ्ज वारे ॥

(सरस पिंगल)

(ख) अजन्मा न आरम्भ तेरा हुआ है,
किसी से नहीं जन्म मेरा हुआ है।
रहेगा सदा अन्त तेरा न होगा,
किसी काल में नाश मेरा न होगा ॥

(नाथूराम शङ्कर)

१८. स्रग्विणी (र र र र)

अन्यनाम—शृंगारिणी

स्रग्विणी वृत्त के प्रत्येक पाद में चार रगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) यह पुरी धन्य है औ मनोहारिणी
सिद्धमार्गी सुशीला महाचारिणी।
धर्मशीला सती धीरता-धारिणी,
सुन्दरी पुण्य है प्रेम शृंगारिणी॥
(रामनरेश त्रिपाठी)

(ख) हरि, री राधिका, श्याम सों क्यों लरै?
मीत सों मान के मान काहे धरै?
चित्त में सुन्दरी क्रोध न आनिये।
स्रग्विणी मूर्ति को कृष्ण की धारिये॥
(भानुकवि

(ग) राम आगे चले मध्य सीता चली।
बंधु पाछे भये सोभ सोभै भली॥
देखि देही सबै कोटिधा कै भनो।
जीव जीवेश के बीच माया मनो॥

(घ) जो कह्यो लक्ष्मणै सैन लाग्यो जहाँ।
सुधि आती हनुमन्त मारयो महीं॥
आशु ही प्राण को आश सो ह्वै गयो।
दच्छ ह्वै तीनि में चेतनो को भयो॥
(केशवदास

[illegible]

(ग) बहु दाम सँवारहिं धाम जती ।
बिषया हरि लीन्हि गई बिरती ॥
तपसी धनवन्त दरिद्र गृही ।
कलि कौतुक तात न जात कही ॥

(घ) सुत मानहिं मात पिता तब लौं ।
अबला नहीं डीठ परी जब लौं ॥
ससुरारि प्यारि लगी जब तें ।
रिपु रूप कुटुम्ब भयो तब तें ॥

(तुलसीदास)

(छ) तब पायन जाइ भरत्थ परे ।
उन भेंट उठाइ कै अङ्क भरे ॥
सिर सूँघि बिलोकि बलाइ लई ।
सुत सो बिन या विपरीत भई ॥

(ज) यह बात सुनी नृपनाथ जबै ।
शर से लगे आखर चित्त सबै ॥
मुख ते कछु बात न जाइ कही ।
अपराध बिना ऋषि देह दही ॥

(केशवदास)

१—पैसा, धन । २—वैराग्य ।
३—इस का उच्चारण लघुवत् होगा ।
४—इस का उच्चारण लघुवत् होगा ।

(ख) जिते नर नागर लोग विचारि ।
सबै घर नै रघुनाथ निहारि ॥
किधौं परमानँद को यह मूल ।
विलोकत हीं सो हरै सब शूल ॥

(ग) न हौं मकराक्ष न हौं इँद्रजीत ।
विलोकि तुम्हैं रण होहुँ न भीत ॥
सदा तुम लक्ष्मण उत्तम-गाथ ।
करौ जनि आपनि मातु अनाथ ॥

(घ) त्रिलोचन लोचन है लगि तोहिं ।
तजौ हठ आनि भजौ किन मोहिं ॥
क्षम्यो अपराध अजौं घर जाहु ।
हिये उपजाउ न मातहि दाहु ॥

(केशवदास)

(ङ) अदेवन की उर आनि अनीति ।
निबाहन को सुरपालन रीति ॥
सुधारन को जन को अधिकार ।
धर्‌यो हरि वामन को अवतार ॥

(च) बड़े जन को नहिं माँगन जोग ।
फबै छल साधन में लघु लोग ॥

१—इस वर्ण का उच्चारण लघुवत् ([illegible] के समान) होगा ।
२—कामदेव । ३—इन्द्रजीत । ४—मत । ५—अजन ।

प्रजागना वल्लभ को विलोकने ॥

(ङ) वयस्क बूढ़े यह बाल बालिका।
सभी समुत्कण्ठित औ अधीर हो॥
सवेग आये ढिग मंजु यान के।
स्व-लोचनों की निधि-चाह लूटने॥

(च) स्वरूप होता जिसका न भव्य है।
न वाक्य होते जिसके मनोज्ञ हैं॥
अतीव प्यारा बनता सदैव है।
मनुष्य सो भी गुण के प्रभाव से॥

(छ) सदा करूँगा अपमृत्यु सामना।
सभीत हूँगा न सुरेन्द्र-वज्र से॥
कभी करूँगा अवहेलना न मैं।
प्रधान धर्मांग परोपकार की॥

(ज) प्रवाह होते तक शेष श्वास के।
सरक्त होते तक एक भी शिरा॥
सशक्त होते तक एक लोम के।
किया करूँगा हित सर्वभूत का॥

(झ) मुकुन्द चाहे यदु-वंश के बनें।
सदा रहें या वह गोप वंश के॥
न तो सकेंगे व्रजभूमि भूल वे।
न भूल देगी व्रजमेदिनी उन्हें॥

(अयोध्याप्रसाद उपाध्याय)

२१. द्रुतविलम्बित (न भ भ र) अन्यनाम सुंदरी

द्रुतविलम्बित वृत्त के प्रत्येक पाद में नगण, दो भगण और रगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) विगत है जलजात निशा हुई।
द्युतिमयी यह पूर्व दिशा हुई॥
छिप उलूक गये भय-भीति से।
अब विकास करो तुम प्रीति से॥

(ख) जनम से पहले विधि ने दिये।
रजत, राज्य, रमादि तुम्हें सब॥
तदपि क्यों उसको न सराहते।
मचलते चलते हो तुम वृथा॥

(ग) तनिक चिंतित हो मत तू कभी।
मिट नहीं सकती भवितव्यता॥
सुरस रक्षक है सब का सदा।
भवन में वन में मन! मान आ॥

(घ) दुखित हैं धन-हीन, धनी सुखी।
यह विचार परिष्कृत है यदि॥
मन, युधिष्ठिर को फिर क्यों हुई?
विमनता मन ताप-विधायिनी॥

(ङ) मन! रमा, रमणी, रमणीयता।

१—कमल।

२—'दि' पादान्त में होने से गुरु माना गया है।

रोये बिना न छन भी मन मानता था।
डूबी महान द्विविधा जनमंडली थी॥
(ख) रोगी दुखी विपत-आपत में पड़े की।
सेवा अनेक करते निज हस्त से थे॥
ऐसा निकेत ब्रज में न मुझे दिखाया।
कोई जहाँ दुखित हो पर वे न होवें॥
(ग) कुंजें वही थल वही यमुना वही हैं।
बेलें वही, बन वही, विटपी वही हैं॥
हैं पुष्प पल्लव वही, ब्रज भी वही है।
प किन्तु श्याम बिन हैं न वही जनाते॥
(घ) आ मन्द मन्द मन मोहन मण्डली में।
बातें वही सरस थे सब को सुनाते॥
साथों समेत सर में मृदुता मिला के।
या थे महा-मधु मयी मुरली बजाते॥
(ङ) फूले हुए कुमुद देख सरोवरों में।
माधो सु-उक्ति यह थे सब को सुनाते॥
उत्कर्ष देख निज अकपले शशी का।
है वारि-राशि सिस-कैरव हृष्ट होता॥
(च) फूलों दलों पर विराजित ओस बूँद।
जो श्याम को दमकती दुति से दिखातीं॥
तो वे समोद कहने-वन-देवियों ने।
की है कला पर निछावर मुक्त माला॥
(छ) कोई दुखी जन विलोक पसीजता है।

राजपुत्रिका समीप साधु बंधु राखि कै।
हाथ चाप बाण लै गये गिरीश नारि कै॥
(ख) वेद मन्त्र तन्त्र शोधि अस्त्र शस्त्र दै भले।
रामचन्द्र लक्ष्मणै सु विप्र छिप्र लै चले॥
लोभ छोभ मोह गर्व काम कामना हई।
नींद भूख प्यास त्रास वासना सबै गई॥
(ग) आसमुद्र के छितीश और जाति को गनै।
राज-भौन भौज को सबै जनै गये बनै।
भौति भाँति अन्न पान व्यंजनादि जेंवहीं,
देत नारी गारि पूरि भूरि भूरि भेंवहीं॥
(घ) मत्त-दंति-राज-राजि बाजि-राज-राजि कै।
हेम हीर मुक्त चीर चारु साज साजि कै॥
वेष वेषवाहिनी अशेष वस्तु सोधियो।
दाइ जो विदेहराज भाँति भाँति को दियो॥
(ङ) हेरि हेरि कै अशोक राज पुत्रिका कह्यो।
देहि मोहिं आगि तैं जो अंग आगि ह्वै रह्यो॥
ठौर पाइ पौन-पुत्र डारि मुद्रिका दई।
आस पास देखि कै उठाय हाथ कै लई॥
(केशवदास)

१—लाघ कर। २—शीघ्र। ३—नष्ट हो गई। ४—समुद्र तक। ५—माग-भाजी। ६—भिगोती है। ७—हाथी। ८—घोड़े। ९—पंक्ति। १०—दहेज। ११—लघु पढ़िए।

२९ मालिनी (न न म य य) ८, ७

मालिनी के प्रत्येक पाद में दो नगण, मगण और दो यगण के क्रम से १८ वर्ण होते हैं। आठ और सात वर्णों के बाद विराम होता है। जैसे—

(क) यह कृषि कितनों की, अन्नदा प्राणदायी,
अहह घन ! तुम्हारी, है रही प्रेमपात्री।
जलधर, तुम ने ही, तो इसे था बढ़ाया॥
फिर उपल गिरा के क्यों स्वय ही मिटाया ?

(ख) इन निपट वरों ने, हे मरुत् ! मोदकारी,
सुरभि सतत दे के, की सु-सेवा तुम्हारी।
व्यथित अब इन्हीं को, यहि मे आज देख,
उत्पीड़ित कर रहे हो, और भी क्यों विशेष ?
(सियारामशरण गुप्त)

(ग) यह कुसुम अभी तो, डालियों में धरा था।
अगणित अभिलाषा, और आशा-भरा था॥
दलित कर इसे तू, काल क्या पा गया रे !
कण-भर तुझ में क्या, हा ! नहीं है दया रे !

(घ) सहृदय जन के जो, कण्ठ का हार होता।
मुदित मधुकरी का, जीवनाधार होता॥
वह कुसुम रँगीला, धूल में जा पड़ा है।
नियति, नियम तेरा, भी बड़ा ही कड़ा है।
(रूपनारायण पांडेय)

(ङ) सह कर कितने ही, कष्ट औ संकटों को।

तय उभय करों से, थामती थे कलेजा ॥
जब वह दिखलाता, दूसरी ओर जाता ।
नत हृदय, करों से ढाँपती थीं दृगों को ॥
(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

२०. चचला (र ज र ज र, ल)

अन्यनाम—चित्र

चञ्चला के चारों चरणों में, रगण, जगण, रगण, जगण रगण और लघु के क्रम से १६, १६ वर्ण होते हैं। अर्थात् इस के प्रत्येक पाद में गुरु, लघु (ऽ।) आठ आठ बार आते हैं। जैसे—

(क) रच्छिबे को यज्ञ कूल बैठ वीर सावधान।
होन लागे होम के जहाँ तहाँ सबै विधान॥
भीम भाँति ताड़का सो भङ्ग लागी कर्न आय।
बान तानि राम प न नारि जानि छाँड़ि जाय॥
(केशवदास)

(ख) पच्छिराज यक्षराज प्रेतराज यातुधान।
देवता अदेवता नृ देवता जिते जहान॥
पर्वतारि अर्थ धर्थ सर्व सर्वथा बखानि।
कोटि कोटि सूर चन्द्र रामचन्द्र दास मानि॥

(ग) रामचन्द्र जू कहत स्वर्ण-लङ्क देखि देखि।

१, २, ४—इन वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा।
३—भयङ्करता से।

(ग) किये विछोह सों अछोह राज देवराय के।
सदा त्रिलोक लोकनाथ धर्म विप्र गाय के॥
अनादि सिद्धि राज-सिद्धि राज आज दीजई।
नृदेवतानि देवतानि दीह सुप्रश्न कीजई॥

(घ) न हौं रहौं न जाउँ जू विदेह धाम को अबै।
कही जो बात मातु पै सो आज मैं सुनी सबै॥
लगे छुधा हि मा मली बिपत्ति माँझ नारिये।
पियास त्रास नीर बीर युद्ध में सम्हारिये॥

३२. मन्दाक्रान्ता (म भ न त त, ग ग) ४, ६, ७

मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक पाद में मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरु के क्रम से १७ वर्ण होते हैं। ४, ६, ७ वर्णों पर विराम होता है। जैसे—

(क) जैसे पाता, तृषित जन है, तृप्ति पानी पिये से।
वैसे उर्वी, मुदित घन के, वारि से हो रही है॥
शोभा पाती, विविध रँग के, शस्य से मेदिनी है।
मानो कान्ता, रुचिर तन पे, वेष भूषा किए हो॥

(गोविन्ददास

(ख) जो रूठेगा, नृपति व्रज का, वास ही छोड़ दूँगी।
ऊँचे ऊँचे भवन तज के जङ्गलों में बसूँगी॥
खाऊँगी फू,ल फल दल को, व्यञ्जनों को तजूँगी।

१—आकाश।
२—में। ३, ४—इनका लघुवत् उच्चारण होगा।

क्यों धाता ने, विलग उनके, गात को यों किया है ॥
फँसे आ के, गुरु गिरि पड़े, बीच में हैं उन्हीं के।
जो दो प्रेमी, मिलित पय औ, नीर लौं नित्यशः थे ॥
(झ) जो मैं कोई, विहग उड़ता, देखती व्योम में हूं।
तो उत्कण्ठा, विवश चित में, आज भी सोचती हूं ॥
होते मेरे, निबल तन में, पक्ष जो पक्षियों से।
तो यों ही मैं, समुद उड़ती, श्याम के पास जाती ॥
(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

४३ शिखरिणी (य म न स भ, ल ग) ६, ११

शिखरिणी के प्रत्येक पाद में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और लघु गुरु के क्रम से १७ वर्ण होते हैं। ६ और ११ वर्णों के अनन्तर यति होती है। जैसे—

(क) मिली मैं स्वामी से, पर कह सकी क्या सम्हल के।
बहे आँसू हो के, सखि! सब उपालम्भ गल के ॥
उन्हें हो आई जो निरख मुझ को नीरव दया।
उसी की पीड़ा का, अनुभव मुझे हा! रह गया ॥
(मैथिली शरण गुप्त)

(ख) मनोहारी शय्या, परम सुथरी भूमितल की।
सुहानी क्या ही है, ललित बन के दूब-दल से ॥
नदी के कूलों की, विमल वर इन्दु-द्युति समे।
नई रती से जो, अति चमकती है निशि दिनै ॥

१, २—पादान्त होने के कारण ये वर्ण गुरु माने जायँगे।

क्यों धाता ने, निलग उनके, गात को यों किया है ॥
कैसे आ के, गुरु गिरि पड़े, बीच में हैं उन्हीं के।
जो दो प्रेमी, मिलित पय औ, नीर लौं नित्यश थे ॥
(झ) जो मैं कोई, विहग उड़ता, देखती व्योम में हूं।
तो उत्कण्ठा, विवश चित में, आज भी सोचती हूं ॥
होते मेरे, निबल तन में, पक्ष जो पक्षियों से।
तो यों ही मैं, समुद उड़ती, श्याम के पास जाती ॥
(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

३ शिखरिणी (य म न स भ, ल ग) ६, ११

शिखरिणी के प्रत्येक पाद में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और लघु गुरु के क्रम से १७ वर्ण होते हैं। ६ और ११ वर्णों के अनन्तर यति होती है। जैसे—

(क) मिली मैं स्वामी से, पर कह सकी क्या सम्हल के।
बहे आंसू हो के, सखि ! सब उपालम्भ गल के ॥
उन्हें हो आई जो निरख मुझ को नीरव दया।
उसी की पीड़ा का, अनुभव मुझे हा ! रह गया ॥
(मैथिली शरण गुप्त)

(ख) मनोहारी शय्या, परम सुथरी भूमितल की।
सुहानी क्या ही है, ललित बन के दूब-दल से ॥
नदी के कूलों की, विमल वर इन्दु-द्युति समे।
नई रेती से जो अति चमकती है निशि दिनें ॥

१, २—पादान्त होने के कारण ये वर्ण गुरु माने जायँगे।

(क) देखि री बलभद्र को, इन ग्वाल बालक सङ्ग में।
श्याम भाँतिन के फबैं, किलकैं महारस रङ्ग में॥
काछनी कटि में कसे, पट नील पीत विसाल हैं।
चन्द्रमा घन युक्त मानहुँ सङ्ग विद्युत-जाल हैं॥

(गदाधर भट्ट)

(ख) आइयो तेहि काल ब्राह्मण वत्स को शव देखि कै।
ताहि पूछत बोलि कै स्तुति भाँति भाँति विशेष कै॥
सङ्ग सुन्दर वाम लक्ष्मण दक्ष देखि सो हर्षई।
बैठि कै सोइ राजमण्डल वर्णई सुख वर्षई॥

(ग) कौन हो कित ते चले, कित जात हो केहि काम जू।
कौन की दुहिता बहू, कहि कौन की यह धाम जू॥
एक गाँउ रहो कि साजन मित्र बन्धु बखानिये।
देश के परदेश के, किधौं पन्थ की पहिचानिये॥

(घ) हाइ हाइ जहाँ तहाँ, सब ह्वै रही सिगरी पुरी।
धाम धामनि सुन्दरी, प्रगटीं सबै जे हुतीं दुरी।
लै गये नृपनाथ को सब लोग श्री सरयू तटी।
राजपत्नि समेत पुत्रनि विप्रलाप गही रटी॥

(केशवदास)

३५. शार्दूलविक्रीडित (म स ज स त त, ग) १२, ७

शार्दूलविक्रीड़ित के हर एक चरण में मगण, सजण, जगण, सगण, दो तगण और गुरु के क्रम से १९ वर्ण होते हैं। यति

१—८—आदि वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा।

इच्छा के अनुकूल कार्य सब मैं, हूँ साध लेता सदा ॥
ज्ञाता हैं कहते मनुष्य वश में, है काल कर्मादि के।
होनी है घटना-प्रवाह पतिता स्वाधीनता यन्त्रिता ॥
(च) ऊँचे दाड़िम से रसाल-तरु थे, औ आम्र से शिंशपा।
यों निम्नोच्च असंख्य पादप कसे, वृन्दाटवी बीच थे ॥
मानो वे अवलोकते पथ रहे, वृन्दावनाधीश का।
ऊँचा शीश उठा मनुष्य जनता के तुल्य उत्कंठ हो ॥
(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

(छ) सायंकाल हवा समुद्र तट की, आरोग्य कारी यहाँ।
प्रायः शिक्षित सभ्य लोग नित ही, आते इसी से यहाँ ॥
बैठे हास्य विनोद मोद करते, सानन्द वे दो घड़ी।
सो शोभा उस दृश्य की हृदय को, है तृप्ति देती बड़ी ॥
(ज) छोटे और बड़े जहाज जल में, देखो वहाँ वे खड़े।
सो भी दृश्य विचित्र, किन्तु हम को, वे हानिकारी पड़े ॥
ले जाते वर वस्तु देश-भर की, जाने कहाँ की कहाँ ?
लाते केवल ऊपरी चटक की, चीजें विदेशी यहाँ ॥
(कन्हैया लाल पोद्दार)

३६ स्रग्धरा (म र भ न य य य) ७, ७, ७

स्रग्धरा वृत्त के प्रत्येक चरण में मगण, रगण, भगण, नगण और तीन यगण के क्रम से २१ वर्ण होते हैं। हर सातवें वर्ण के बाद विराम होता है। जैसे—

नाना फूलों फलों से, अनुपम जग की,
वाटिका है विचित्रा।

थी मनमोहन रूप सुधा 'मदिरा'
मद मोहिँ छकावहि तू ॥
(भिखारी दास)

(ख) क्षत्रिन के प्रन युद्ध जुवा सजि
बाजि चढ़े गजराजन हीं ।
वैस को बानिज और कृषी प्रन
शूद्र कैं सेवन-साजन हीं ॥
विप्रन को प्रन है जु यही सुख
सम्पति सों कछु काज नहीं ।
कै पढ़िबो कैं तपोधन है फन,
माँगत बाँम्हन लाज नहीं ॥

(ग) चातक स्वात में इक बूँद पियै
तिहिँ आश्रित प्रान रहे ।
देखत चंद की ओर चकोर रहै
मिलिबे हु की आस गहे ॥
प्रान-बिना न बनै चकवान 'को
घोस सँयोग सदा 'ही रहै ।
है न निमित्त हु मित्र ! इतो दुख
चित्त कहाँ किहिँ भाँति सहे ॥
(अर्जुनदास केडिया)

(घ) * मालत एक गुरु मदिरा गुरु

* इस सवैये में अनेक सवैयों के लक्षण संक्षेप में दिए गए हैं । हमारे द्वारा दिए गए लक्षणों से इस का अर्थ स्पष्ट समझ में आजायगा ।

श्री मनमोहन रूप सुधा 'मदिरा'
मद मोहिँ छकावहि तू ॥
(भिखारी दास)

(ख) क्षत्रिन के प्रन युद्ध जुवा सजि
बाजि चढ़े गजराजन ही ।
वैस को बानिज और कृषी प्रन
शूद्र को सेवन-साजन ही ॥
विप्रन को प्रन है जु यही सुख
सम्पति सों कुछ काज नहीं ।
कै पढ़िवो कै तपोधन है कन,
माँगत बाँहनें लाज नहीं ॥

(ग) चातक स्वयत में इक बूँद पिये
तिहिँ आश्रित प्रान रहै ।
देखत चंद की ओर चकोर रहै
मिलिबे हु की आस गहै ॥
प्रान-पिया न बनै चकवान 'कौं
चौस सँयोग सदा 'ही रहै ।
है न निसिस हु मित्त ! इतो दुख
चित्त कहाँ किहिँ भाँति सहै ॥
(अर्जुनदास केडिया)

(घ) * भामन एक गुरु मदिरा गुरु

* इस सवैये में अनेक सवैयों के लक्षण संक्षेप में दिए गए हैं । हमारे द्वारा दिए गए लक्षणों से इस का अर्थ स्पष्ट समझ में आजायगा ।

३८. मत्तगयन्द सवैया (७भ + ग ग)

(अन्यनाम मालती)

मत्तगयन्द सवैये के प्रत्येक पाद में सात भगण और दो गुरु के क्रम से २३ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) जाल प्रपंच पसार घने कुल गौरव का उर फाड़ रहा है।
मानव मण्डल में मिल दाहक दानव दुष्ट दहाड़ रहा है॥
जाति समुन्नति की जड़ को कर घोर कुकर्म उखाड़ रहा है।
भूल गया प्रभु-शंकर को जड़ जीवन जन्म बिगाड़ रहा है॥
(नाथूराम शंकर)

(ख) हो रहते तुम साथ जहां रहता मन साथ सदैव वहीं है।
मंजुल मूर्ति इसी उर में यह नेक कभी टलती न कहीं है॥
लोलुप लोचन को दिखती वह चारु छटा सब काल यहीं है।
है यह योग मिला हम को जिस में दुःख मूल वियोग नहीं है॥
(गोपाल शरणसिंह)

(ग) प्राम-प्रयाण-कथा सुन के उसके मुख-पंकज का मुरझाना।
और जरा हँस के उसका अपने मन का वह भाव छिपाना॥
किन्तु अचानक ही उसके घर लोचन में जल का भर आना।
संभव है न कभी मुझ को इस जीवन में वह दृश्य भुलाना॥
(गोपाल शरणसिंह)

(घ) या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहू पुर का तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि नवौं निधि को सुख नन्द की गाय चराय बिसारौं।
रसखान कहै इन नैनन तें ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।
कोटिन हू कलधौत के धाम करील की कुंजन ऊपर वारौं॥

(छ) दाम की दाल छदाम के चाउर घी अँगुरीन लै दूरि दिखायो
टोनों सों नोन धरयो कछु आनि सबै तरकारी को नाम गनायो॥
विप्र बुलाय पुरोहित को अपनी विपती सब भाँति सुनायो।
साहुती आज सराध कियो सो भली विधि सों पुरखा फुसलायो
(कविता कौमुदी)

३९. चकोर सवैया (७ भ+ग ल)

चकोर सवैये के चारों चरणों में सात सात भगण और गुरु लघु के क्रम से २३ २३ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) सोहत है तुलसी बन में
रुचि रास मनोहर नन्द किशोर।
चारि हु पास है गोप वधू
मणि दास हिये में हुलास न थोर॥
नीर-ज गोप वधून[1] को आनन[1]
मोहन नैन भ्रमै जिमि भौंर।
मोहन-आनन चन्द लखे
वनितान के[11] लोचन चारु चकोर॥
(भिखारीदास)

(ख) हे प्रिय बन्धु, विरोध मिटा कर
प्रीति प्रचार करो सब ओर।

१—११—इन वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा।

(ख) द्विज वेद पढ़ें सुविचार बढ़ें बल पाय चढ़ें सब ऊपर को।[1]
अविरुद्ध रहैं ऋजु पथ गहैं परिवार कहैं वसुधा भर को॥
ध्रुव धर्म धरें पर दुःख हरें तन त्याग तरें भव सागर को।[2]
दिन फेर पिता, वर दे सविता करदे कविता कवि शंकर को
(नाथूराम शङ्कर)

(ग) इसके अनुरूप कहें किसको वह कौन सुदेश समुन्नत है।
समझे सुर लोक समान इसे उनका अनुमान असंगत है॥
कवि कोविद वृन्द बखान रहे सब का अनुभूत यही मत है।
उपमान-विहीन रचा विधि ने बस भारत के सम भारत है॥

(घ) पुर ते निकसी रघुवीर-वधू,
धरि धीर दये मग में डग द्वै।
झलकी भरि भाल कनी जल की,
पट सूखि गए मधुराधर वै॥
फिर बूझति हैं चलनोऽब कितो,
पिय पर्णकुटी करिहौ कित ह्वै।
तिय की लखि आतुरता पिय की,
अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै॥

(ङ) वर दन्त की पंगति कुन्दकली अधराधर पल्लव खोलन की
चपला चमकै घन बीच जगै छवि मोतिन-माल अमोलन की
घुँघुरारी लटैं लटकैं मुख ऊपर कुंडल लोल कपोलन की।
निवछावरि प्रान करै तुलसी बलि जाउँ लला इन बोलन की॥

१, २—इन वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा।

४१ वाम सवैया (७ जगण+यगण)

(अन्यनाम-मकरन्द)

वाम सवैये के प्रत्येक पाद में सात जगण और एक यगण के क्रम से २४ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) दसैं[1] द्विज औरहि मुक्तिय माल[2]
पयोनिधि मैं उपजै नहिँ जो है।
भए न सरोवर अम्बुज और
सुलोचन काहु कुमारहिँ मोहै॥
सरोरुह में न रहै अरु लच्छि[3]
प्रतच्छ सुलच्छनि[4] तो सम को है।
सदा परिपूरन सो मुख राधे
सुधाधर[5] और धरा पर सोहै॥
(अलङ्कार आशय)

(ख) लेप उर यानि लगै वर डीठि[6]
दरचाप्रति कुँचै[7] सकुचै मति-वेली।
नवैं[8] नवग्रीव थकै गति केशव
बालक ते सँगही सँग खेली॥
लिए सब आधिन[9] व्याधिन संग

१—दाँत। २—मोतियों की माला। ३—लक्ष्मी।
४—सुलच्छणों वाली। ५—चन्द्र। ६—दृष्टि।
७—सिकुड़े। ८—झुक जाती है। ९—मानसी व्यथा

जान सका यह क्यों न मुझे
कहते सब हैं वह है सब जानता।
है नित्त ही रहता उर में
फिर क्यों न मुझे वह है पहचानता॥

(गोपालशरणसिंह

(ख) आपु को वाहन बैल बली
बनिताहु को वाहन सिंहहिं पेखि कै।
भूले को वाहन है सुत एक सु
दूजो मयूर के पच्छ बिसेखि कै॥
भूषन है कवि "चैन" फनिंद के
बैर परे सब ते सब लेखि कै।
तीन हूँ लोक के ईश गिरीश
सु योगी भये घर की गति देखि कै॥

(ग) साज सज्यौ नृप रामहिं राज कों
रीति जथा कुल बेद पुरान की।
बाजें बधाई भरी धुनि धामनि
कोकिल कठिन के कल गान की॥
सो सपनो सो भयौ सपने हु
न जानी यही भई बात अठान की।
आजु अचानक सानुज जानकी
जानकी जीवन के बन जान की॥

जान सका यह क्यों न मुझे
कहने सब हैं यह है सब जानता।
है नित्त ही रहता उर में
फिर क्यों न मुझे यह है पहचानता॥

(गोपालशरणसिंह)

(ख) आपु को वाहन बैल बली
बनिताहु को वाहन सिंहहिं पेखि कै।
भूले को वाहन है सुत एक सु
दूजो मयूर के पच्छ बिसेखि कै॥
भूषन है कवि "बैन" फनिंद के
बैर परे सब ते सब लेखि कै।
तीन हूँ लोक के ईश गिरीश
सु योगी भये घर को गति देखि कै॥

(ग) साज सज्यो नृप रामहिं राज लौं
रीति जथा कुल बेद-पुरान की।
बाजै बधाई भरी धुनि धामनि
कोकिल कंठिन के कल गान की॥
सो सपनो सो भयो सपने सु
न जानी वही भई बात अठान की।
आजु अचानक सानुज जानकी
जानकी जीवन के बन जान की॥

ओ जनरंजन दुष्ट विभंजन
गंजन-गर्व 'हरी' सुखधाम है।'

सोइ त्रिलोक को नाथ अली,
वृषभानुलली की गली को गुलाम है॥

(वियोगी हरि

(छ) आनन है अरविंदन फूले
अली-गन! भूले कहा मँडरात हो।

कीर तुम्हें कहा बाई लगी
भ्रम बिंब के ओठन को ललचात हो॥

'दासजू' ब्याली न वेनी-बनाय
है पापी कलापी कहा इतरात हो।

बोलती बालना बाजती बीन
कहा सिगरे मिलि घेरत जात हो॥

(भिखारीदास)

(ज) प्यार-पगे पिय प्यारे सों प्यारी!
कहा इमि कीजत मान मरोर है।

हैं 'रतनाकर' पै निसि वासर
तो छवि-पानिय को तरसो रहै॥

है मन मोहन मोहौ पै तो पर

घर नारि सती पति सों चित्त फाटत॥
भा विधि[1] नौं प्रतिकूल जबै
तब ऊँट चढ़े पर कूकर काटत॥
(कविता कौमुदी)

(ग) पुन्यहि पूरण पाप विनाशन
निर्मल कीरति भक्ति बढ़ावन।
दायक ज्ञान रु घायक[2] मोह
त्रिगुण सुप्रेममयी मुद पावन॥
श्रीमद् रामचरित्र सुमानस
नीर सुभक्ति समेत नहावन।
'नायक' ते जग सूरज रूप
जहान के ताप को ताप नसावन॥
(विनायक राव)

(घ) पायँन पीरियै पाँवरियाँ[3]
कटि केशरिया दुपटा छवि छाजित।
भुज मिले गजमोतिय हार में
रीति सितासित[4] भाँति है भ्राजित॥
अंग अपार प्रभा अवलोकत
होत हजार मनोभव[5] लाजित।

१—दैव।
२—नाशक। ३—खड़ाऊँ। ४—सफ़ेद और काला।
५—कामदेव।

काहू सौं है न सकै जननी[1]
जग में अपनी ये स्वभाव निवारन ॥
(सेठ कन्हैयालाल पोद्दार)

४४. सुन्दरी सवैया (८ स+ग)

सुन्दरी सवैये के हर एक चरण में आठ सगण और एक गुरु के क्रम के २५ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) हम दीन दरिद्र हुताशन में,
दिन रात पड़े दहते रहते हैं।
बिन मेल विरोध महानद में
मन बोहित से बहते रहते हैं ॥
कवि शङ्कर काल कुशासन की
फटकार कड़ी सहते रहते हैं।
पर भारत के गत गौरव की
अनुभूत कथा कहते रहते हैं ॥
(नाथूराम शङ्कर)

(ख) सुख शान्ति रहे सब ओर सदा
अविवेक तथा अघ पास न आवें।
गुण शील तथा बल बुद्धि बढ़ें
हठ वैर विरोध घटें मिट जावें ॥
सब उन्नति के पथ में विचरें
रति-पूर्व परस्पर पुण्य कमावें।

१—अग्नि।

पदुहास-विलासन यों भवभीति
हमारी हरौ वृषभानु-दुलारी ॥
(अर्जुनदास केडिया)

(ट) मुनिनाथ के गात रुमाचन साथहि
यो सहसा सिव-चाप उठायौ ।
नर नायन के मुख मंडल-साथहि
जो अपनो तल-ओर नमायौ ॥
मिथिलेस-सुता मन-साथहि त्यौं
गुन खेंचिकै जो छिन माहिँ चढायौ।
भृगुनाथ के गर्व अखंडित साथ सो
खंडित कै रघुनाथ गिरायौ ॥
(कन्हैयालाल पोद्दार)

४५ सुख (८ स+ल ल)

सुख सवैये के प्रत्येक पाद में आठ सगण और दो लघु के क्रम से २६ वर्ण होते हैं । जैसे—

सरजू-सरिता तट वाटिका में रट
लागि रही घरटा बिन सक हि ।
तिहिँ हौ समझें नहिँ कोकिल कों
चढि बैठयो जु काक रसाल कें अंक हि ॥
सब ही की महानतां होवत है जब
थान कों आन परै जु अतक हि ।

१—६ इन वर्णों को लघु माना और पढ़ा जायगा ।

९ ११, ११ वर्णों के किन्हीं चार वृत्तों के नाम और लक्षण-मात्र लिखो।

१० भुजंगी और भुजंग प्रयात छन्दों में क्या भेद है? उदाहरण देकर विशद करो।

११ भुजंगप्रयात, स्रग्विणी और तोटक वृत्तों के भेद को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करो।

१२ मौक्तिकदाम, तरलनयन और मोदक वृत्तों के उदाहरण लिख कर सिद्ध करो कि वे उदाहरण इन्हीं वृत्तों के हैं।

१३ द्रुतविलम्बित, वंशस्थ और इन्द्रवंशा छन्दों में से किन्हीं दो के लक्षण और उदाहरण दो।

१४ कोई ऐसा पद्य लिखो जिस के प्रत्येक पाद में चार यगण या चार रगण आते हों।

१५ कोई ऐसा पद्य लिखो जिस के हर चरण में चार सगण या चार जगण आते हों।

१६ कोई ऐसा पद्य लिखो जिस के चारों पादों में १२, १२ वर्ण लघु हों।

१७ १२, १२ वर्णों के वृत्तों में से जो चार वृत्त आप को सब से सुन्दर प्रतीत हों उनका एक एक उदाहरण दो।

१८ प्रहर्षिणी और कलहंस वृत्तों में क्या भेद है? दोनों का एक एक पाद लिख कर भाव को स्पष्ट करो।

१९ वसन्त तिलका और मुकुन्द वृत्तों में से किसी एक का विस्तृत वर्णन करो।

९ ११, ११ वर्णों के किन्हीं चार वृत्तों के लक्षण-मात्र लिखो।

१० भुजंगी और भुजग प्रयात छन्दों में क्या भे[illegible] हरण देकर विशद करो।

११ भुजगप्रयात, स्रग्विणी और मोटक वृत्तों [illegible] उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करो।

१२ मोतियदाम, तरलनयन और मोदक वृत्तों [illegible] लिख कर सिद्ध करो कि वे उदाहरण [illegible] के हैं।

१३ द्रुतविलम्बित, वंशस्थ और इन्द्रवंशा छन्दों [illegible] दो के लक्षण और उदाहरण दो।

१४ कोई ऐसा पद्य लिखो जिस के प्रत्येक प[illegible] यगण या चार रगण आते हों।

१५ कोई ऐसा पद्य लिखो जिस के हर चरण में [illegible] या चार जगण आते हों।

१६ कोई ऐसा पद्य लिखो जिस के चारों पाद[illegible] [illegible]र्ण लघु हों।

१७ १२, १२ वर्णों के वृत्तों में से जो चार [illegible] सब से सुन्दर प्रतीत हों उनका एक एक उ[illegible]

१८ प्रहर्षिणी और कलश अवलि वृत्तों में क्या भे[illegible] का एक एक पाद लिख कर भाव को स्प[illegible]

१९ वसन्त तिलका और मुकुन्द वृत्तों में से [illegible] विस्तृत वर्णन करो।

सप्तम अध्याय

वर्णार्धसम वृत्त

जिन छन्दों के पहले तथा तीसरे और दूसरे तथा चौथे चरणों में वर्ण संख्या और वर्ण-क्रम समान होते हैं, उन्हें वर्णार्ध सम वृत्त कहते हैं। हिन्दी-भाषा में इन छन्दों का व्यवहार बहुत कम होता है तो भी हम ने इनका अति संक्षिप्त वर्णन करना उचित समझा है, ताकि विद्यार्थी छन्द के इस भेद से नितान्त अनभिज्ञ न रह जायँ।

१. सुन्दरी

सुन्दरी वृत्त के विषम पादों में दो सगण, जगण और गुरु के क्रम से १०, १० वर्ण तथा सम पादों में सगण, भगण, रगण और लघु गुरु के क्रम से ११, ११ वर्ण होते हैं। इस प्रकार समस्त वृत्त में कुल ४२ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) चिर-काल रसाल ही रहा,
जिस भावज्ञ कवीन्द्र का कहा।

(छ) विहगावली बोलने लगी,
यह प्राची पट खोलने लगी।
अटवी हिल डोलने लगी,
सरसी सौरभ घोलने लगी॥
(मैथिलीशरण गुप्त)

२. द्रुतमध्या

द्रुतमध्या वृत्त के विषम चरणों में तीन भगण और दो गुरु के क्रम से ११, ११ वर्ण होते हैं तथा सम चरणों में नगण, दो जगण और यगण के क्रम से १२, १२। इस प्रकार समस्त वृत्त में कुल ४६ वर्ण होते हैं। जैसे—

रामहिं सेवहु रामहिं गावो।
तन मन दै नित सीस नवावो॥
जन्म अनेकन के अघ जारो।
हरि हरि गा निज जन्म सुधारो॥

(भानुकवि)

३ पुष्पिताग्रा

पुष्पिताग्रा वृत्त के विषम चरणों में दो नगण, रगण और यगण के क्रम से १२, १२ वर्ण होते हैं और सम चरणों में नगण, दो जगण, रगण और गुरु के क्रम से १३, १३। इस प्रकार समस्त छन्द में कुल ५० वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) फिरि फिरि भ्रमि के कहै नवेली,
विधि यह कौन प्रकार की चमेली।

कुछ भी न रहा सब नाश हुआ ॥
रजनीश प्रताप-पतंग हुआ ।
बस भारत का रस भंग हुआ ॥

(ग) मत भेद भयानक पाप रहा ।
जिन प्रेम न मेल-मिलाप रहा ॥
अभिमान अधोमुख ठेल रहा ।
अधमाधम ढोंग ढकेल रहा ॥
सुख जीवन का मग तंग हुआ ।
बस भारत का रस भंग हुआ ॥

(घ) अवधेश धनुर्धर राम नहीं ।
व्रजनायक श्री घनश्याम नहीं ॥
अब कौन पुकार सुने इस की ।
परमाकुल गैल गहे किस की ॥
तड़पे मृग-तोय तरङ्ग हुआ ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥

(नाथू राम शङ्कर)

जिस छन्द में भुजंगी (य य य ल ग) के छः चरण हों, उसे भुजंग्यात्मक मिलिन्द पाद कहते हैं। जैसे—

(ख) भुजंगी-आत्मक मिलिन्दपाद

(क) सुखी साधु को मान खाना न दो ।
किसी दीन को एक दाना न दो ॥
बड़े हो बड़ा दान देना वहाँ ।

मजेदार मूँछ मरोड़ा करो ।
निठल्ले रहो काम थोड़ा करो ॥
चबाते रहो पान दूँरे डली ।
न विज्ञान फूला न विद्या फली ॥

(नाथूराम शङ्कर)



(क) साधारण दंडक

१.सुधानिधि (१६ बार ऽ।)

सुधानिधि के प्रत्येक पाद में १६ बार गुरु लघु के क्रम से ३२ वर्ण होते हैं। जैसे—

का करै समाधि साधि का करै विराग आग
का करै अनेक योग भोगहू करै [redacted] काह।
का करै समस्त वेद औ पुराण शास्त्र देखि
कोटि जन्म लौ पढ़ै मिलै तऊ कहू न थाह॥
राज्य लै कहा करै सुरेश औ नरेश है
न चाहिए कहूँ सु दु:ख होत लोक लाज माह।
सात द्वीप खंड औ त्रिलोक संपदा अपार
लै कहा सु कीजिये मिलैं जु आप सीयनाह॥
(काव्य सुधाकर)

२ अनंगशेखर (ल ग यथेष्ट)

अनंगशेखर के प्रत्येक पाद में वर्ण संख्या २६ से कम नहीं होती, अधिक चाहे जितनी हो। इस में लघु गुरु की अनेक आवृत्तियाँ होती हैं। यह भूलना न चाहिए कि चारों चरणों में वर्ण-संख्या समान ही रहेगी। जैसे—

तडाग नीर-हीन ते सनीर होत केशोदास
पुंडरीक झुंड औंर मंडलीन मंडहीं।
तमाल वल्लरी समेत सूखि सूखि कै रहे ते[२]

१, २—इन वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा।

(ख) चामर-सी चंदन-सी चंद्रिका सी चन्द-ऐसी,
चाँदनी चमेली चारु चाँदी-सी सुघर है।
कुंद-सी कुमुद सी कपूर-सी कपास-ऐसी,
कल्पतरु-कुसुम सी कीरति सी घर है।
'पूरण' प्रकास-ऐसी काँस-ऐसी हास-ऐसी,
सुख के सुपास ऐसी सुषमा की घर है।
पाप को जहर ऐसी कलि को कहर ऐसी,
सुधा की लहर ऐसी गंगा की लहर है॥
(देवीप्रसाद पूर्ण)

(ग) चर्चा जहाँ देश की हो मेरी जीभ वहीं खुले,
और नहीं खुले कहीं खुदा की खुदाई में।
मेरे कान गान सुनें साँचे देश भक्तन के,
और गान आवे कभी मेरे न सुनाई में॥
मेरे अंग रंग चढ़े एक देश-प्रेम को ही,
और रंग भंग हो के बूड़ जा तराई में।
मेरो धन मेरो तन मेरो मन मेरो जीव,
मेरो सब लगे प्रभो देश की भलाई में।
(गिरिधर शर्मा)

(घ) इन्द्र जिमि जम्भ पर बाडव सुअम्भ पर,
रावण सदम्भ पर रघुकुल राज है।
पौन वारिवाह पर सम्भु रतिनाह पर,
ज्यों सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है॥
दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुंड पर

वर्णो पर विराम होता है। अन्तिम दो वर्ण क्रमशः गुरु लघु होते हैं। शेष वर्णों में गुरु लघु का कोई नियम नहीं। जैसे—

(क) उमड घुमड घन घन आवत अटान ओट,
छन घन जोति छटा छटकि छटकि जात।
सोर करैं चातक चकोर पिक चहुँ ओर,
मोर ग्रीव मोरि मोरि मटकि मटकि जात॥
सावन लौं आवन सुनो है घनश्याम जू को,
आगन लौं आय पाय पटकि पटकि जात।
हिये विरहानल की तपनि अपार उर,
हार गज मोतिन के चटकि चटकि जात॥

(कविता कौमुदी)

(ख) कटकित केतकी गुलाब करि डारे, कारे,
काकन से कोकिल, कलकित कलानिधान।
बरसै दरिद्रन के दस पाँच पूत प्राय,
एकहि लौं तरसै धनेस मनुजेस आन॥
ब्रज में करीर, नीर नीरधि से खारे किए,
दाता घन-हीन दीन, कृपन समृद्धिमान।
नाम अज [illegible] तें परै जान, पै अठान चार—
आनन के कैसे एक आनन करै बखान॥

(अर्जुनदास केडिया)

(ग) मगल करन हारे कोमल चरण चारु,
मगल से मान मही गोद में धरत जात।

द्वारा स्पष्ट करो ।

५. वर्ण सम, वर्णार्धसम और वर्ण-विषम वृत्तों के पारस्परिक भेद को उदाहरणों द्वारा व्यक्त करो ।

६. मिलिन्दपाद छन्द कौन सा होता है ? किसी वर्णात्मक मिलिन्द-पाद का उदाहरण दो ।

७ ललित और भुजङ्गात्मक मिलिन्दपाद के लक्षण लिखकर दोनों का एक एक उदाहरण दो ।

८. वर्ण दण्डक किन्हें और क्यों कहते हैं?

९ वर्ण-दण्डक मुख्यतया कितने प्रकार के होते हैं, और उन का परस्पर क्या अन्तर है ?

१० जब मुक्त दण्डकों में वर्ण-क्रम निश्चित नहीं होता तो उन्हें वर्ण वृत्त क्यों कहा जाता है ?

११ साधारण दण्डकों में से किसी एक का लक्षण और उदाहरण दो ।

१२. मुक्तक दण्डकों में से किस का प्रचार सब से अधिक है ? उसका लक्षण लिख कर दो उदाहरण दो ।

१३ रूप घनाक्षरी और जल हरण दण्डकों के भेद को उदाहरणों द्वारा व्यक्त करो ।

१४ घनाक्षरी और देवघनाक्षरी मुक्तकों के पारस्परिक अन्तर को स्फुट करो । दोनों का एक एक उदाहरण भी दो ।

१५ वर्ण वृत्तों के मुख्यतया कौन २ से भेद होते हैं ? सब का लक्षण और एक एक उदाहरण दो ।

(ख) जो सब ठौर सदा फिरते हैं, निर्भय देश विदेश।
तर्क-सिद्ध श्रेयस्कर जिन से, मिलते हैं उपदेश॥
ऐसे अतिथि महापुरुषों का, कर सादर सत्कार।
भक्ति-भाव से मग्न शङ्कर को, धर्म दया उर धार॥
(नाथूराम शङ्कर)

उपर्युक्त दोनों पद्य सरसीनामक मात्रिक छन्द में हैं, क्योंकि प्रत्येक पाद में मात्रा-संख्या २७ है, यति १६, ११ पर है, और पादान्त में गुरु लघु है। परन्तु इन दोनों में वर्ण-वृत्त के लक्षण भी घटते हैं। क्योंकि प्रत्येक पाद में ११ ८ के विराम से १९ वर्ण हैं। सो दोनों के लक्षणों से युक्त होने के कारण वे उभय छन्द हुए।

यहाँ यह बात याद रखनी चाहिए कि वर्ण-सम वृत्तों में भी वर्ण-संख्या, वर्ण-क्रम और फल-स्वरूप मात्रा-संख्या समान होती है, परन्तु उन्हें उभय छन्द नहीं कहते। उभय छन्द तभी होगा जब मात्राएं अपनी संख्या में समान हों और वर्ण अपनी संख्या में, परन्तु वर्ण क्रम का नियम न हो। एक-दो उदाहरण और देखिए—

(ग) दीपक पै कर प्यार, पतंग प्रताप दिखाते।
त्याग त्याग तन प्राण, प्रीति-रस-रीति सिखाते॥
आहा, अविचल-प्रेम, निठुर से जो करते हैं।
वे उस प्रिय की रूप,-अग्नि में जल मरते हैं॥

(घ) अपनी सन्तति काक कृपण से पलवाती है।
पेड़ पेड़ पर बैठ, मुदित मङ्गल गाती है॥

एकादश अध्याय

मुक्त या स्वच्छन्द छन्द

शताब्दियों से कविता मात्रा-संख्या, वर्ण-संख्या, वर्ण-क्रम, यति, तुक आदि की श्रृङ्खलाओं से बँधी चली आ रही थी। वर्तमान के कई विद्वानों का विचार है कि ये बन्धन कवि-कल्पना की स्वच्छन्द उड़ान में बेतरह बाधक बनते हैं। इन बन्धनों के कारण वह अपने भावों को उस स्वाभाविक और प्रभावशाली भाषा में प्रकट नहीं कर सकता जिसमें वे अनायास निकलना चाहते हैं। इसलिए कवियों के लिए उक्त बन्धन नहीं होने चाहिएँ। इसी मत के अनुसार अनेक देशी तथा विदेशी कवि कविता कर रहे हैं। उन की कविता में कोई पंक्ति १० अक्षरों की है तो कोई २० की, कोई पाद ६ मात्राओं का है तो कोई २६ का। ऐसे ही तुक और यति के भी बंधनों को भी तोड मरोड कर फेंक दिया गया है। सो मुक्त या स्वच्छन्द छन्द उसे कह सकते हैं जो मात्रा और वर्ण के पुराने बन्धनों से मुक्त हो और जिस में केवल भावों और लय का प्राधान्य हो। जैसे—

भारत की विधवा

वह इष्ट देव के मन्दिर की पूजा सी,
वह दीप-शिखा सी शान्त भाव में लीन,
वह क्रूर काल ताडव की स्मृति-रेखा सी,
वह टूटे तरु की छुटी लता सी दीन—
दलित भारत की ही विधवा है।
षड् ऋतुओं का शृङ्गार,
कुसुमित कानन में नीरव पद-सञ्चार,
अमर कल्पना में स्वच्छन्द विहार—
व्यथा की भूली हुई कथा है
उसका एक स्वप्न अथवा है।

(सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला')

उपर्युक्त तीनों कविताओं में पुराने मात्रिक अथवा वर्ण-छन्दों की खोज करना समय खोना है। परन्तु ऊँचे स्वरसे पढने पर स्पष्ट प्रतीत होता है कि इसमें लय का अभाव नहीं है। ऐसे ही अर्थ विचारने पर सिद्ध होता है कि ये सभी कवितांश उत्कट भावों से छलछला रहे हैं। सो हम निःशङ्क कह सकते हैं कि ये रचनाएं स्वच्छन्द छन्दों में की गई हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१. उभय-छन्द किसे कहते हैं? उदाहरण देकर आशय को स्पष्ट करो।

साधारण अभ्यास

(क) १ "हर एक व्यक्ति छन्दों से प्यार करता है और हर एक अवस्था में प्यार करता है"—इस उक्ति पर अपने विचार विस्तार पूर्वक प्रकट करो।

२. छन्दों के प्रारम्भ और विकास के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करो।

३. छन्द-शास्त्र किसे कहते हैं ? संस्कृत और हिन्दी के प्रमुख छन्द-ग्रन्थों का परिचय दो।

४ छन्द कितने हैं ? क्या उन की संख्या नियत की जा सकती है ? उत्तर युक्ति-युक्त होना चाहिए।

५ छन्द शास्त्र में अक्षर या वर्ण, गुरु, लघु, मात्रा, गति, यति, चरण, दल और छन्द, किन्हें कहते हैं ? अपने भाव को स्पष्ट करने के लिए प्रत्येक का उदाहरण भी दो।

६. छन्द-शास्त्र में गण किसे कहते हैं। वे कितने प्रकार के होते हैं ? उन का महत्त्व क्या है ?

७ वर्ण वृत्तों में कौन से गणों से काम पड़ता है ? उन के नाम लक्षण, उदाहरण, देवता तथा शुभाशुभ फल लिखो।

८. कौन कौन से गण और अक्षर दूषित माने गये हैं ? यदि वे छन्दों के आरम्भ में आ जायें तो उन का दोष कैसे निवारण किया जाता है ?

९ तुक कितने प्रकार की होती है ? प्रत्येक प्रकार की तुक का एक एक उदाहरण दो।

११ सनाढ्य-पूजा अघ-ओघ हारी ।
अखंड आखंडल-लोक-धारी ॥

१२ यताढ्य हे मम मित्र-वर्य ।
क्यों लू किसो के फिर दान को मैं ।

१३ धुई का घटाटोप घेरा रहेगा ।
मिटेगा नहीं मेल मेरा रहेगा ।

१४ कर सुकथन, हृदय हरन ।
सुखद अमृत, सदृश वचन ।

१५ देखि देही सनै कोटिया के भनो ।
जीव जीवेश के बीच माया भनो ॥

१६ तुम्हें तर्क ने तोल पाया नहीं ।
किसी युक्ति के हाथ आया नहीं ॥

१७ सारे अकुपादि बलिष्ठ भारे ।
समाम में अंगद वीर मारे ॥

१८ कंचन के उपवीत हि साजे ।
ब्राह्मण सो यह राङ विराजे ॥

१९ समय था सुनसान निशीथ का ।
अटल भू तल में तम राज्य था ॥

२० यह बात सुनी भृगुनाथ जबै ।
कहि रामहिं लै घर जाहु अबै ॥

२१ मारग की रज तापित है अति ।
केशव सीतहि शीतल लागति ॥

२२ भ्राता भरत्यादि करें प्रनाम हैं ।

१ सव सों ललुआ, मिलि कै रहिये
मम जीवन मूरि सुनौ मनमोहन।
२ बान कह्यो तब रावण सों
अब वेगि चढ़ाउ शरासन को।
३ पिक चातक कीर चकोर शिखी
सब का अब तो अपमान करेंगे।
४ सास मरे ससुरा पजरे
इस बाजर में पल को न रहूँगी।
५ भीषन भोरहि त बनि पूषन
है जन के तन को बहु तावत।
६. चेत करो, धिक जीवन है यदि
नाम मिला जग में कुल बोर।
७ तीन हु लोक कि ईश गिरीश सु
योगि भये घर की गति देखि कै।
८. साँई भलि वाम अरू धन धाम
तु काह भयो बिनु रामहिं जाने।
९. परिवार घना धन पास नहीं
सुज भम दरिद्र भरा घर है।

(घ) निम्न-लिखित पद्य वा पद्यांश किन छन्दों में हैं? उत्तर युक्ति-युक्त होने चाहिए।

सखि, देख, दिगन्त है खुला।
तम है, किन्तु प्रकाश से घुला॥

८. क्रोध से विषाद से दया या पूर्व प्रीति ही से,
किसी भी बहाने से तो याद किया कीजिए ॥

९ बर बेर बेर लै सराहै बेर बर बहु
रसिक बिहारी दस बँधु कहँ फेर फेर ।

१० खोल दो नयन मत मुझे तरसाओ और
सुख सरसाओ प्रेम सुधा बरसाओ तुम ।

११ झिल्ली झनकारैं पिक, चातक पुकारैं बन,
मोरनि गुहारैं उठैं, जुगुनू चमकि चमकि ॥

१२ जन दीन दुखी कर्ता । हरता भय भीर को ॥
लोक तीनिहु में फैल्यो । श्लोक श्री रघुवीर को ॥

१३ जब दिनेश की ओर, मोर झरने झड़ते हैं ।
इन्द्र चाप तब अन्य घने घन पै पड़ते हैं ॥
नील अरुण के साथ, पीत छवि दिखलाते हैं ।
हम को मिश्रित रंग, बनाना सिखलाते हैं ॥

१४ पाल कुटुम्ब सदुद्यम-द्वारा भोग सदा सुख भोग ।
करना सिद्ध ज्ञान गौरव से, निश्रेयस प्रद योग ।
जप तप यज्ञ दान देवेंगे, जीवन के फल चार ।
भक्ति-भाव से भज शङ्कर को, धर्म दया उर धार ॥

(नाथूराम शङ्कर)

१५ जागो फिर एक बार !
उगे अरुणाचल में रवि,
आई भारती रति कवि कंठ में,